RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 4 अंक 6 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका जून-जुलाई 2021

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद

पर्यटन हब बनेगा राजसमंद

अब बदल रही तस्वीर

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

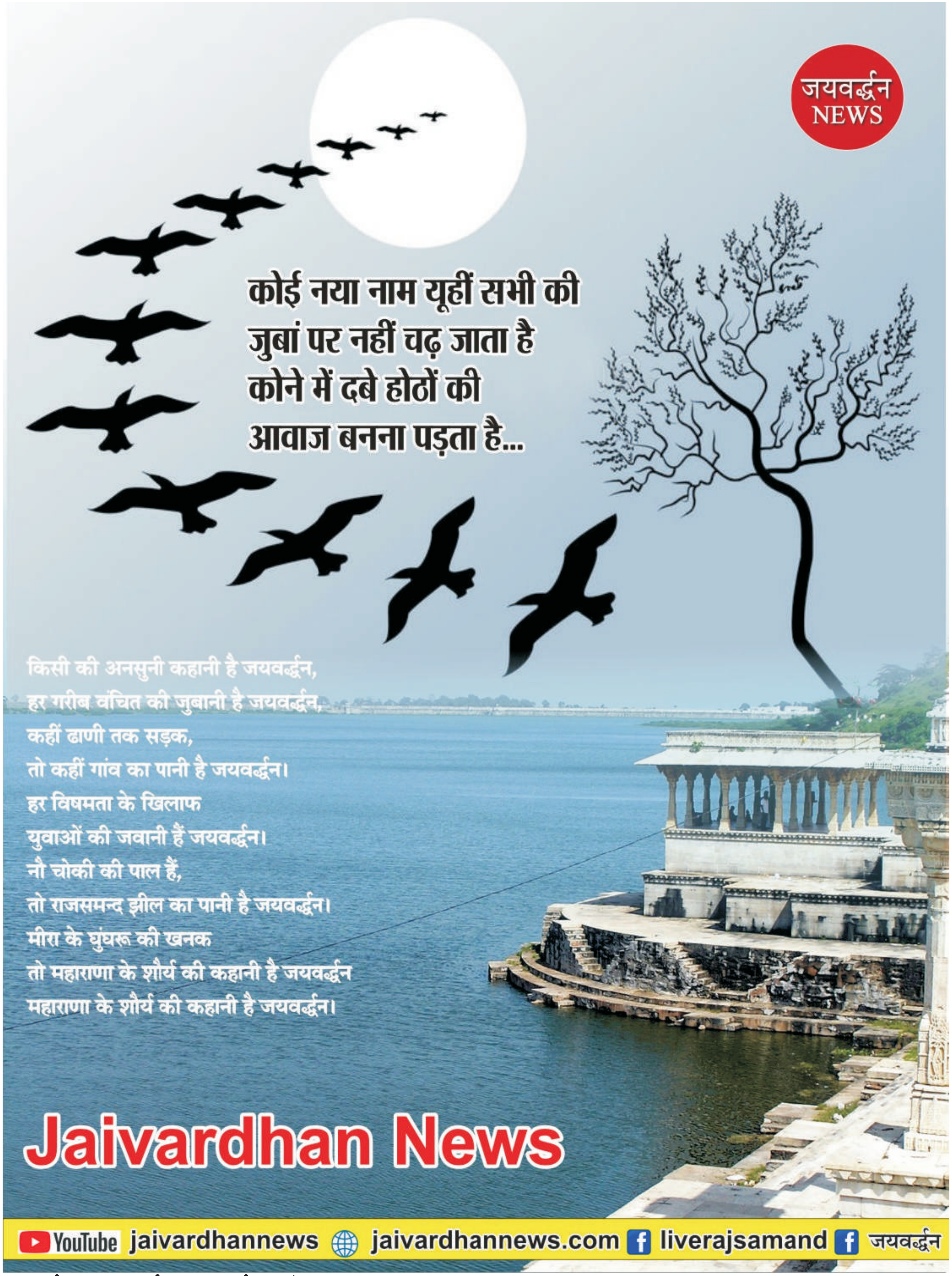
जयवर्द्धन NEWS
कोई नया नाम यूहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...
किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी हैं जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।
Jaivardhan News
YouTube jaivardhannews
jaivardhannews.com
liverajsamand
जयवर्द्धन

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

सम्पादकीय

महकते राजसमंद की खुबशू पर्यटकों तक पहुंचाने की जरूरत

विरासत को विरले ही संभाल पाते हैं। मुफ्त में मिली या उपहार की कीमत का आंकलन करना मुश्किल होता है। शायद इसीलिए हम सुदृढ़ इतिहास समृद्ध भूगोल और आध्यात्मिकता का केन्द्र होने पर भी परिधि पर है। जी हां, यही समस्त संभावनाएं ही तो पर्यटन का आधार स्तम्भ होते हैं। भंवरे को आकर्षित करने के लिए एक पुष्प के रूप, रंग और सुगंध तीनों चीजों का होना आवश्यक है। रूप, रंग समीप आने पर ही पता चलता है, परन्तु ही होती है, जो पवन के माध्यम से उसे अपनी ओर खिंचती है। बतौर रूप, रंग हमारे पास राणा राजसिंहजी द्वारा प्रदत्त विश्व प्रसिद्ध राजसमंद झील प्रस्तरों पर उत्कीर्ण विशाल शिलालेख, संगमरमर पर उत्कीर्ण कलात्मक वास्तु के रूप में नौचोकी, श्री द्वारकाधीश का भव्य राजप्रासाद, दयालशाह जैन मंदिर, तेरापंथ का उद्गम स्थल अंधेरी ओवरी, उच्च पर्वत पर स्थित अन्नपूर्णा माता मंदिर है, तो साथ ही पूर्व काल में आचार्य चतुरसेन शास्त्री और भारतेन्दु हरीशचंद्र जैसे प्रख्यात विद्वानों का यहां आकर प्रशंसा में स्वर्ग से तुलना करना अतीत के पन्नों में खो चुके हैं।

राजसमंद जिले की बात करें, तो नाथद्वारा, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी और देवगढ़ तक पर्यटकों का आवागमन बहुतायत में है, उनसे छुटा है, तो केवल जिला मुख्यालय, जिसमें विरासत से प्राप्त सभी संसाधन है। **सिर्फ इसकी खुशबू ही शायद पर्यटकों तक नहीं पहुंचा पाए हैं। इसी खुशबू को बिखरने का एक प्रयास मात्र है, जयवर्द्धन का यह विशेषांक।**

धीरेन्द्र सनाढ्य 'शिल्पी'
आर्कीटेक, कांकरोली
मो. 9413975979

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** पर्यटन हब बन रहा राजसमंद, अब बदल रही तस्वीर पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** पर्यटन की दृष्टि से राजसमंद अनूठा पेज – 7
3. **व्यंग्य :** हेलमेट में मक्खी पेज- 9
4. **राजसमंद आज कल और कल** पेज- 10
5. **व्यंग्य :** ओटन लगे कपास, शराफत की पढ़ाई, नया नियम पेज – 12
6. **शख्सियत :** बीएल सामरा पेज – 14
7. **तीखी मिर्ची :** श्रेय लेने की होड़ पेज – 16
8. **मेरा गांव मेरे लोग :** भंवरलालजी जोशी पेज – 20
9. **मेवाड़ी चौपाल :** वायरस रा खेंचो कान : सिस्टम रो राखो मान पेज – 20
10. **व्यंग्य :** बिन फेसबुक सब सून पेज – 22
11. **चिंतन :** कोरोना वैक्सीन को पेटेंट किया जाना चाहिए ? पेज – 24
12. **प्रेरणा :** Suspension प्रथा पेज- 25
13. **अर्थतंत्र :** आदर्श व्यापारी पेज – 26
14. **लघुकथा :** आजाद पेज – 28
15. **व्यंग्य :** गर्व से कहो हम सब है झूठे और बेशर्म पेज – 30
16. **टेक्नीकल विंडो :** बिटकॉइन पेज – 34

पर्यटन हब बन रहा राजसमंद अब बदल रही तस्वीर

राजसमन्द जिला अपनी धार्मिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संपदा से परिपूर्ण है। राजस्थान सम्पूर्ण विश्व में जिन महाराणा प्रताप के शौर्य और स्वाभिमान के कारण प्रसिद्ध है। राजसमंद का सौभाग्य है कि उनकी जन्मस्थली व कर्म स्थली यहीं मौजूद है। मानव निर्मित एशिया की मीठे पानी की दूसरी सबसे बड़ी झील राजसमंद में ही स्थित है। गुजरात, महाराष्ट्र सहित सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध प्रमुख आस्था के केन्द्र श्रीनाथजी, द्वारकाधीशजी एवं चारभुजाजी यहां आशीर्वाद दे रहे हैं। चीन की दीवार के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी कुंभलगढ़ की दीवार एवं स्थापत्य कला का बैजोड़ नमूना कुंभलगढ़ दुर्ग भी राजसमन्द में है। पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक, धार्मिक एवं भौगोलिक रूप से सम्पन्न होने के बावजूद राजसमन्द जिला पर्यटकों को आकर्षित करने में असफल रहा है। तीन दशक में पर्यटन विकास को लेकर कई योजनाएं भी बनी, मगर जमीनी स्तर पर लागू नहीं हो पाई। वर्तमान राजसमंद उपखंड अधिकारी आईएएस सुशील कुमार की पहल पर नगरपरिषद द्वारा वाटर स्पोर्ट्स प्रोजेक्ट तैयार किया गया। तत्कालीन विधायक किरण माहेश्वरी के निर्देशन में सभापति सुरेश पालीवाल द्वारा इस कार्य में रूचि ली गई, मगर चुनाव की आचार संहिता के कारण प्रोजेक्ट रूक गया। नगरपरिषद चुनाव के बाद फिर नए सभापति की कमान संभालने वाले अशोक टांक व आयुक्त जनार्दन शर्मा द्वारा टेंडर के बाद अहमदाबाद की कंपनी ईसीएसटी को कार्यादेश जारी कर दिए। कंपनी द्वारा नौचोकी पाल के पास प्लेटफार्म बनाकर कुछ संसाधन झील में उतारे गए और कार्य प्रगति पर है।

उदयपुर से बड़ी राजसमंद झील

राजसमन्द झील फहसागर झील से सात आठ गुना बड़ी होने के बावजूद यहां पर्यटन आकर्षित नहीं होते हैं। क्योंकि झील का रखरखाव नहीं है। अवज़्य मत्स्याखेटए किनारों पर अतिक्रमण एवं पर्यटकों के रोकने के लिए अन्य आकर्षण की कमी है। राजसमन्द जिले के अन्य दर्शनीय स्थल भी विकसित करने की जरूरत है।

राजसमंद में पर्यटन के कई द्वार

10 अप्रैल 1991 को राजसमंद को जिले के रूप में दर्जा दिया गया, किंतु योग्य राजनीतिक नेतृत्व की कमी एवं स्थानीय नेताओं की विफलता के फलस्वरुप आज भी राजसमंद जिला अपनी पहचान, अधिकारों और आधारभूत सुविधाओं के साथ पर्यटकों के लिए तरस रहा है।

यूं तो पहले से ही राजसमंद का क्षेत्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भू संपदाओं और मार्बल सहित प्रचुर मात्रा में खनिजों के खनन से आर्थिक रूप से भी काफी समृद्ध और वैभवशाली रहा है, जो उसे पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है। कोरोना महामारी के पूर्व वर्ष में पर्यटन से भारत ने लगभग 23 अरब डॉलर का राजस्व अर्जित किया, जिसे वर्ष 2023 तक 100 अरब डॉलर करने का लक्ष्य रखा गया है। पर्यटन विकास के लिए हमारा शहर राजसमंद ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं नैसर्गिक सौंदर्य से फलीभूत है। सिर्फ जरूरत है तो स्थानीय नागरिकों की जागरूकता एवं राजनीतिक इच्छा शक्ति की। यदि जनप्रतिनिधि, स्थानीय प्रशासन एवं प्रबुद्ध नागरिक मिलकर पर्यटन विकास के लिए निर्धारित समय में एक रोडमैप तैयार करके सामूहिक रूप से प्रयास करें तो निश्चित रूप से हमारा राजसमंद शहर आने वाले समय में देश के प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में पर्यटकों की पसंदीदा डेस्टिनेशन में शामिल होगा एवं स्थानीय लोगों के लिए नए रोजगार के अवसर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर पर सृजित होंगे।

तो आइए देखते हैं कि किन बिंदुओं के आधार पर राजसमंद में पर्यटन को बढ़ा सकते हैं।

- एशिया की दूसरी सबसे बड़ी मीठे पानी की राजसमंद झील पर बनी पाल को अपने मूल हेरिटेज स्वरूप और परिस्थितिक तंत्र को ध्यान में रखकर रिंग रोड बनाई जाए। झील के तट पर बड़े पैमाने पर खजूर सहित अनुकूल वृक्षारोपण करके देशी एवं विदेशी पक्षियों के लिए बर्ड सेंचुरी स्थापित करने के साथ ही नए पार्क विकसित कर ईको टूरिज्म को बढ़ा सकते हैं।
- राजसमंद उपखंड अधिकारी आईएएस सुशील कुमार के द्वारा नॉर्थ इंडिया का सबसे बड़ा एडवेंचर स्पोर्ट्स टूरिस्ट पॉइंट की योजना को राजनीतिक सहयोग से यदि धरातल पर उतारा जाए तो राजसमंद साहसिक पर्यटन के लिए अग्रिम श्रेणी में आ सकता है। इसमें जेके एयर स्ट्रिप से स्काई ड्राइविंग, राजसमंद झील में सी प्लेन, बंजी जंप, पैराग्लाइडिंग, काईकिंग, वाटर स्पोर्ट्स, जिपलाइन, राजसमंद झील में वर्ष में एक बार आयरन मैन कंपटीशन, ट्रेकिंग और हाइकिंग, डेजर्ट बाइकिंग, हॉट एयर बैलून आदि कई एडवेंचर स्पोर्ट्स एक्टिविटी शामिल है। साथ ही एडवेंचर टूरिज्म की शुरुआत को अपने शिखर तक ले जाना चाहिए।
- राजसमंद सफेद मार्बल के लिए विश्व में विख्यात है। इस दृष्टिकोण से राजसमंद के सभी चौराहे, सभी प्रमुख स्थलों को योजना अनुसार बड़ी मात्रा में सफेद मार्बल लगाकर हेरिटेज लुक प्रदान कर मार्बल सिटी की थीम पर राजसमंद शहर को विकसित कर सकते हैं।
- राजसमंद झील के पश्चिम में स्थित पहाड़ियों पर एक विशाल सुंदर पार्क बनाया जाए, जहां महाराणा राजसिंह, महाराणा प्रताप सहित मेवाड़ से जुड़े ऐतिहासिक महापुरुषों की आदम कद मूर्तियां और उनका गौरवशाली इतिहास सजीव रूप से वर्णित करता हुआ म्यूजियम हो। इसके अतिरिक्त

राजसमंद के आसपास के ऐतिहासिक स्थलों एवं किलो जैसे रकमगढ़ का किला आदि को पुरातत्व विभाग के सहयोग से पुनः उनकी ऐतिहासिक पहचान स्थापित की जाए।

- श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीशजी, श्री चारभुजाजी, श्री एकलिंगनाथ आदि 50 किलोमीटर के दायरे में स्थित मंदिरों का धार्मिक सर्किट के तहत जोड़कर एवं राजसमंद, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी, दिवेर आदि ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन सर्किट से जोड़कर पर्यटन को बढ़ा सकते हैं।
- निजी कंपनियों के टेंडर आमंत्रित करके राजसमंद में हेलीपैड का निर्माण करके हेलीकॉप्टर सेवा की शुरुआत करनी चाहिए। जिससे पर्यटक राजसमंद, कुंभलगढ़ और नाथद्वारा स्थित शिव मूर्ति जैसे महत्वपूर्ण स्थानों का हवाई दर्शन का आनंद प्राप्त कर करें।
- लगभग 3700 वर्ष पुरानी ताम्र युगीन गिलुंड सभ्यता का प्रचार प्रसार एवं उचित रूप से संरक्षण करके राजसमंद में पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण करने वाले पर्यटक को की संख्या बढ़ा सकते हैं।
- राजसमंद जिला मुख्यालय पर लगभग 80 बीघा पर बनने वाले खेल स्टेडियम को अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित करवाने के आधार पर यदि विकसित किया जाए, तो राजसमंद राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खेलों के लिए खेल पर्यटन सेंटर के रूप में प्रगति कर सकता हैं। साथ ही स्थानीय खिलाड़ियों का खेल भी विश्व स्तरीय होगा।
- राजसमंद नैसर्गिक रूप से सुंदर एवं यहां का जलवायु अनुकूल होने के कारण यहां पर योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा के बड़े प्राइवेट सेंटर खोलकर चिकित्सा टूरिज्म को भी बढ़ा सकते हैं।
- राजसमंद झील को वर्षभर भरा रखने एवं सिंचाई के पानी के लिए कोरी बातों के बजाय धरातलीय योजना बनाकर उसे अमल में लाना चाहिए राजसमंद झील को भरने का एक निदान यह भी है कि बनास और खारी नदी के आधे बहाव को खारी फीडर नहर को चौड़ा करके राजसमंद झील में लाकर ओवरफ्लो से बहाव को पुनः बनास नदी में छोड़ दिया जाए।
- पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन विभाग व स्वैच्छिक संस्थाओं, निजी उद्यमियों एवं आम जनता के सहयोग की आवश्यकता है। सड़कों की कनेक्टिविटी से सीधी पहुंच और यातायात के ब्रॉडगेज एवं सी प्लेन जैसे साधन पर फोकस करके राजसमंद को अतुल्य भारत का हिस्सा बना सकते हैं। यदि हम हमारे मेहमानों के प्रति भारतीय परंपरा के अनुसार अतिथि देवोभव के भाव में शालीन सुसंस्कृत व्यवहार करेंगे और अपना राजसमंद साफ, स्वच्छ और हरा भरा रखेंगे, तो भी राजसमंद पर्यटकों के लिए पसंदीदा स्थान बन जाएगा और यहां आने वाले पर्यटको के माध्यम से हम राजसमंद एवं भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक परंपरा को विश्वभर में पहुंचा कर गौरवान्वित भी होंगे।

शि
रा

मनोज हाड़ा
शारीरिक शिक्षक व पर्यावरण प्रेमी
राजसमंद, मो. 99299-37001

राजसमंद झील : पर्यटन के सौपान

मानव मन की कल्पनाएं अनन्त है, किन्तु उनकी सफलता सही सोच और श्रम पर निर्भर है। राजसमंद झील का सौन्दर्य हमने आजादी से पूर्व देखा था। जब इसमें अंग्रेजों का जहाज उतरता था और हर वर्ष 30 फीट तक भरा रहता था। गऊ घाट पर बोट था, जो जहाज के उतरने के माकुल वातावरण का संकेत देता था। यह जहाज कराची से ग्वालियर की उड़ान भरता तथा राजसमंद एरिगेशन बंगलों के पास उतरता। बर्मा सेल कम्पनी से ईंधन भरकर पुनः उड़ जाता। उस वक्त वह जहाज देखकर कल्पना करते कि क्या हम भी वाटर बोट या जहाज द्वारा कभी झील की सैर करेंगे। वह कल्पना धीरे धीरे जोर पकड़ रही है, मगर बात झील के हर वर्ष भरने पर अटक जाती है। पानी हो, तो झील में पर्यटन के ऐसे स्थल निर्मित किए जाए, जिन्हें देखने के लिए लालायित हो। झील के किनारे कुछ स्थल पूर्व के है, जिनमें नौचोकी की शिल्प कला, तोरण, शिलालेख, जिसे रणछोड़ भट्ट ने संस्कृत ने रचा था और महाराणा राजसिंहजी ने चौखटों की ताको में लगवाया था। राजप्रासाद तथा प्रभु श्री द्वारकाधीश मंदिर व एरिगेशन गार्डन आदि प्रमुख स्थल है। झील में सती का चबुतरा, जलचक्की सलूस का टापू तथा श्री द्वारकेश राष्ट्रीय व्यायामशाला की उत्तर दिशा वाली पहाड़ी आदि स्थलों से भी सौन्दर्य बढ़ा सकते हैं। कई बार झील के रिंग रोड की योजनाएं बनी, कई चुनाव जीते, झील को भरने की वाकल योजना तथा नहर सुधार के लिए बजट भी बने, मगर वे फाइलों में दफन हो गए। अब हमें मुंगेरीलाल के हसीन सपने देखने से तो तौबा करना होगा। इस दिशा में कार्य करना होगा। अब गुजरात की एजेंसी ने वाटर बोट चलाने का मानस बनाया है, लेकिन पर्यटकों को लुभाने के लिए हाइवे 8 पर सेवाली व अन्य प्रमुख स्थलों पर भी इसकी जानकारी देनी होगी। नाथद्वारा के गणेश टेकरी की तर्ज पर किसी बड़े चौराहे पर या अदब की छतरी के यहां आदमकद महाराणा राजसिंह की मूर्ति स्थापित होनी चाहिए। यहां झील के दर्शनीय स्थलों का प्रचार प्रसार करने की जरूरत है। झील की स्वच्छता, घाटों की नियमित सफाई व मत्स्याखेट को रोकने पर प्रशासन व नगरपरिषद तथा सिंचाई विभाग विशेष ध्यान दें। इसके लिए स्थानीय लोगों को राजनीति से ऊपर उठकर प्रयास करने की जरूरत है।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
मो. 9828625757

पर्यटन की दृष्टि से राजसमंद लुठा ही नहीं, अनूठा भी

दक्षिण राजस्थान के नाभि केन्द्र में स्थित राजसमंद जिला पर्यटन की दृष्टि से न केवल लुठा है, वरन कहे अनूठा है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अपनी भौगोलिक स्थिति, प्रकृति, इतिहास, स्थापत्य, अध्यात्म के कारण यहां देशी, विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने की तमाम संभावना मौजूद है। आवश्यकता बस इस बात की है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ साथ समयबद्ध तरीके के समन्वय कर आगे बढ़ने की। यहां यह कहना भी ठीक नहीं होगा कि जिले में पर्यटन विकास की दृष्टि से कुछ नहीं हुआ। कुछ कदम आगे बढ़े तो बहुत कुछ बाकी भी है।

अरावली पर्वत शृंखला के मध्यवर्ती भाग में स्थित होने के कारण कुंभलगढ़, गोगुंदा और पाली की सरहद पर जरगा पठार पर माउण्ट आबु की तर्ज पर ईको टूरिज्म की तमाम संभावना मौजूद है। कुंभलगढ़, रणकपुर, परसुरामजी, वीरों का मठ, सूरजकुंड, वरदड की नाल, हमेरपाल, चारभुजानाथ और सैवंत्री रूपनारायण जी का साझा मिनी ट्यूरिज्म सर्किट प्लान बना राष्ट्रीय पार्क सफारी के विलेज ट्यूरिज्म संभावना को तलाशना होगा। चौधरी चरणसिंह ग्राम पर्यटन की महात्वाकांक्षी प्रोजेक्ट की यहां चर्चा बहुत हुई, पर नतीजा तो ढाक के तीन पात ही रहा।

राजसमंद जिला पश्चिम भारत का एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां रावली टॉडगढ़ अभयारण्य के पहाड़ी इलाकों से नेरोगेज रेललाइन गुजरती है। उत्तर पूर्वी भारत की तर्ज ट्रेनसफारी राजस्थान आने वाले पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण बन सकती है। इस हेरिटेज प्रोजेक्ट को लेकर गत भाई दशक से खूब बात सुनी, पढ़ी। एक बार तो हालात ऐसे बने कि ट्रेन सफारी के कौच कामलीघाट पहुंचने की खबरें पुख्ता इंतजाम के साथ प्रकाशित हुई पर बात बनी नहीं। आमेट, देवगढ़, भीम क्षेत्र के लिए ट्रेन सफारी बहुत लाभदायक है। गौरीधाम, आंजनेश्वर, सीमा की नाल, वैवर महादेव, दीवेर, छापली, गोकूलगढ़, देवगढ़ मिनी ट्यूरिज्म सर्किट प्लान बना काम करने की जरूरत है। राजसमंद जिले में अध्यात्म की दृष्टि से प्रचुर देशी पर्यटकों को आकर्षित करने की संभावना है। प्रभु श्रीनाथजी के दर्शन को आने वाले पर्यटकों को राजसमंद जिले में कैसे रोक सके। उन संभावना पर करने की दिशा में मिराज समूह की पहल शिवमूर्ति बहुत बड़ी पहल है। इसे आगे बढ़ाते हुए राजसमंद झील में नौकायन, वाटर स्पोर्ट्स की दिशा हम आगे बढे हैं। पर इनका हश्र भी पैराग्लाइडिंग की तरह न हो जाए ऐसे में संचालन को व्यवहारिक रूप देना होगा। साबरमती रिवर फ्रंट को आधार बनाकर रिंगरोड, तालेडी नदी फ्रंट के मोर्चे पर काम आगे बढ़ सकता है, तो सिहाड़ तालाब सौंदर्यीकरण, ईको वाटर स्पोर्ट्स की दिशा में बड़ा आकर्षण बन सकता है। श्रीद्वारकाधीश जी मंदिर के साथ पुष्टी परम्परागत रेती मोहल्ला, चौपाटी, मुखर्जी चौराहा, सूरजपोल, मंदिर परिक्रमा में हेरिटेज लुक अध्यात्म पर्यटन लुभाने का प्रयास होना चाहिए। नाथद्वारा, कांकरोली के विकास में सभी प्राथमिक पर्यटन ढांचा विकास में आंचलिकता का ध्यान रखना जरूरी है। नौचोकी, मोलेला, हल्दीघाटी, नाथद्वारा, राजमहल राजनगर, लालबाग, गणेश टेकरी का मिनी ट्यूरिज्म सर्किट प्लान में पर्यटकों की प्राथमिक पर्यटन ढांचा विकास व ठहराव के उपाय आकर्षक पहली आवश्यकता है।

सामान्य देशी पर्यटकों को आकर्षित करने में रेलवे ब्रॉडगेज बड़ा कदम है, जिससे सहज, सस्ती, सुगमतापूर्वक पहुंचा संभावना बन सकती है। गिलूण्ड पुरा संपदा का खजाना है, पर अभी इस दिशा में कोई ठोस कदम पर्यटन की दृष्टि से नहीं उठाया गया है। खनिज की प्रचुरता हमारे लिए औद्योगिक पर्यटन के द्वार खोलती पर इसके लिए सड़क, रेल, पानी, बिजली संचार के आधुनिकीकरण पहली आवश्यकता है। उम्मीद है हम सब मिलकर इस दिशा में समन्वय के साथ आगे बढ़ें।

दिनेश श्रीमाली
शिक्षाविद् राजसमंद

पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं, तो प्रयास क्यों नहीं

पर्यटन की दृष्टि से राजसमन्द में अपार संभावनाएं है। ये बात राजनीतिक एवं प्रशासनिक गलियारों की सबसे पसंदीदा व सर्वाधिक दोहराई जाने वाली पंक्तियां रही है । इस संभावना में कुछ गलत भी नही है। क्योंकि श्रीनाथ जी की नगरी नाथद्वारा न केवल पूरे विश्व में विख्यात है, अपितु शिव प्रतिमा की स्थापना के पश्चात एक अद्भुत आकर्षण बनने की राह पर गतिमान है। जहां नाथद्वारा धर्मनगरी है, तो कुम्भलगढ़ एक महानतम इतिहास को समेटे हुए है एवं इसके ऐतिहासिक महत्व के साथ आसपास का मनोरम वातावरण, जंगल सफारी एवं दुर्गम पहाड़ के आकर्षण से ये एक बड़े पर्यटन स्थल के रूप में पहचान बना चुका है। साथ ही बड़े व सुविधाओं से परिपूर्ण होटल इस स्थान पर पर्यटकों को एक सुखद अनुभव दे रहे है।

यहां तक पर्यटन की ये तमाम सम्भावनाएं सही प्रतीत होती है, परन्तु जैसे ही हम जिला मुख्यालय की तरफ रुख करते हैं, तो सम्भावनाएं सुस्त और पर्यटन पस्त होता नजर आता है, जबकि विश्व की सुंदर झील में से एक राजसमन्द झील, विशेष धार्मिक महत्व संजोएं प्रभु श्री द्वारिकाधीश मंदिर, इतिहास के बदलावों का साक्षी दयालशाह का किला एवं विदेशी पक्षियों के कलरव से गुंजायमान झील के किनारे जैसे आकर्षण इस जिला मुख्यालय को मनोरम व अद्भुत बनाते हैं। इसके बावजूद समीपवर्ती नाथद्वारा व कुंभलगढ़ के पर्यटक का राजसमन्द का रुख न करना एक पहेली प्रतीत होता रहा है, मगर अब गत कुछ वर्षों से इस पहेली को सुलझाने के गंभीर प्रयास होते दिख रहे हैं। माता अन्नपूर्णा मंदिर के नवीन दृश्य, झील तक जाने का सुगम मार्ग, व्यू पॉइंट एवं झील पर राणा राजसिंह पैनोरमा के निर्माण से पर्यटन को बढ़ाने की कोशिश प्रारम्भ हुई, जो अब झील में वाटर स्पोर्ट्स, पैरा ग्लाइडिंग एवं दयालशाह किला को भी पर्यटन केंद्र बनाने के प्रयासों तक विस्तारित की जा रही है। इस तमाम जद्दोजहद के परिणाम तो भविष्य के गर्भ में है, परन्तु इन योजनाओं के धरातल पर उतरने से ये अहसास तो होता है कि कुछ गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं एवं यकीनन प्रत्येक राजसमन्दवासी इनके सफल होने की कामना कर रहा है। एक लंबे अरसे तक राजसमंद में पर्यटन की अपार संभावनाओं वाली पंक्ति से जुबानी जमा खर्च करने के बाद अब धरातल पर सपनो को उतारने के लिए प्रशासन व राजनीतिक प्रयासों के धन्यवाद के साथ में राजसमन्द के नागरिकों से भी निवेदन करूंगा कि इस शहर को सुंदर व मनोरम बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है एवं हम सभी को मिलकर इस निभाना होगा।

हेमेन्द्रसिंह मारवाड़
राजसमंद

त्रिस्तरीय विकास की जरूरत

राजसमंद शहर ऐतिहासिक नगर है, जो विरासत व पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। इसका त्रिस्तरीय विकास होना चाहिए। सरकार व प्रशासन की दृष्टि से नगरपरिषद को पहले करते हुए सड़कों का जाल बिछा देना चाहिए। प्रमुख स्थलों पर जाने वाली सड़कों को चौड़ा करना चाहिए। जगह जगह मूलभुत सुविधाएं उपलब्ध करवानी होगी। यातायात का विकास करना होगा। इसके अलावा संस्थान स्तर पर सभी विभाग व संस्थाएं अपने कार्यक्रम का विकास व प्रचार करें। बाहरी सदस्यों व रिश्तेदारों को आमंत्रित करें। सभी संस्थान अपनी विशिष्ट संस्कृति के आधार पर संस्कृति केन्द्र विकसित करें। व्यक्तिगत स्तर पर सभी विद्वानों, कलाकारों, समाजसेवियों, कम्पनी कलाकार का विस्तार व्यथाओं को प्रशिक्षण देना चाहिए, जिससे युवा स्वावलम्बी बने। जैसे- फोटोग्राफी, कृषि, बागवानी, शास्त्रज्ञान आदि। इस प्रकार तीन स्तर पर कार्य करने से राजसमंद पर्यटन केन्द्र व स्वावलम्बी बनेगा और विश्व में अपनी पहचान बना सकेगा।

डॉ. रचना तैलंग
शिक्षाविद्, साहित्यकार
कांकरोली

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

हेलमेट में मक्खी

सुनील जैन राही
व्यंग्यकार, दिल्ली 9810960285

भीड़भाड़ वाले इलाके में हम बाइक पर सन्नाते चले जा रहे थे। पीछे बैठी मोहतरमा की बाहें 50 इंची पतली कमर में बैल्ट की तरह बंधी थीं और हम कुत्ते के गले में पटटे की तरह हिल भी न पा रहे थे। रही सही कसर तो तब पूरी हो गई, जब हमारे हेलमेट में मक्खी घुस गई। मक्खी को देखें- पहचाने, मक्खी है या मधुमक्खी या ततैया? खैर जो भी हो पहचान नहीं पाए। अगला- पिछला ब्रेक मारकर खड़े हो गए। हेलमेट उतारते- उतारते दशा मजदूर की तरह पसीने- पसीने हो गई। सोचा, हेलमेट न पहना होता तो ज्यादा बेहतर था। डर इस बात का था कि पुलिस और भूत का कोई भरोसा नहीं किस नीम या जामुन के पेड़ के पीछे से बाहर निकल आए और इंडिया गेट पर तमाशे का बन्दर बना दें।

पुलिस वाला न मिले तो साहूकार और मिलने पर चोर। हम चोर साबित हो गए। एक दिन जब हेलमेट नहीं पहना था। पुलिस वाले के हाथ- पैर जोड़े और 100 रुपए नकद उसकी जेब के हवाले किए। तब जाकर समझ में आया कि हेलमेट पहनना सिर की सुरक्षा के साथ- साथ जेब की भी सुरक्षा करता है।

नकद अदायगी से पहले दिए गए ज्ञान को याद करके मन आत्मग्लानि से भर गया। वह या तो व्यंग्यकार होगा या पत्नी पीड़ित। दोनों ही हाथ नहीं उठाते, लेकिन घाव जिन्दगी भर का दे देते हैं।

ज्ञान शुरू हो गया। हां तो श्रीमान् बीमा बहुत भारी रकम का बीमा होगा? 250 रुपए का हेलमेट न पहनने से घर वालों को ऐशो आराम की जिन्दगी मिल जाएगी? मरने के बाद स्वर्ग मिले या ना मिले घर वाले स्वार्गिक आनन्द से अभिभूत हो जाएंगे।

अगर ऐसा न हुआ तो? मर नहीं पाए और जिन्दा बच गए तो सर जमीन पर टकराने से याददाश्त चली गयी। शीला को लीला और बॉस को चपरासी समझने लगे, तब न तो स्वर्ग अनुभूति होगी न ही परिवार रिजार्ट जा पाएगा। डॉग घसीटी का आनन्द पूरा मोहल्ला उठाएगा सो अलग। हेलमेट नहीं लगाने के दो फायदे हैं- जीवन की सारी मुसीबतों से छुटकारा और दूसरा एक बेरोजगार को रोजगार।

इस बार खैर हम जिंदा भी थे, हेलमेट भी लगा रखा था, लेकिन रेड लाइट जम्प कर गए। पुलसिया प्रवचन सुनना पड़ा। प्रवचन के दौरान वो दोस्त और रिश्तेदार नानी की तरह याद आ गए, जो पुलिस सेवा में आईपीएस से लेकर कांस्टेबल तक के पद पर सुशोभित थे। हमने फोन से बात कराना चाहा, फोन अपने पास रखकर प्रवचन शुरू कर दिया। अकेले- अकेले बोर हो जाते हैं, कोई तो श्रोता मिले? हम ही बचे थे।

हां तो श्रीमान रेड लाइट जम्प करके बोल्ट का रिकॉर्ड तोड़ दिया? जापान ओलिम्पिक क्वालीफाई कर लिया? अब तो स्वर्ण पदक भारत की झोली में आ ही गया समझो? एक मिनट में कितनी दूरी तय कर लेते ? रेडियो में काम करते हो क्या? एक मिनट भी लेट नहीं हो सकते? खैर एक मिनट रुक जाते तो भारत सरकार को 100 रुपए के राजस्व की हानि हो जाती। देश की अर्थ- व्यवस्था धरा पर आ जाती। तुम्हारे मजबूत कंधे पर टिका देश का विकास धड़ाम से नीचे गिर जाता?

हमने हार नहीं मानी, बहाने बनाने शुरू कर दिए। जैसे होते हैं। मैं, अस्पताल जा रहा था, आफिस में बॉस के साथ मीटिंग, निगम बोध (श्मशान) जाना है। सभी बहाने विफल थे। दूसरा फोन निकालकर तथाकथित पुलिस मित्र से बात करवाने की कोशिश करते हैं। बात हर बार नहीं बनती। कुछ पुलिस वाले ईमानदार भी होते हैं। ठेठ लहजे में कहा- तू चाहे पीएम को फोन लगा ले, एक बन्दा तेरे साथ जाने के लिए तैयार है, जो तूने कहा, सच नहीं निकला तो 1000 रुपए का चालान और मोटरसाइकिल जब्त। तेरे पहुंचने से डॉक्टर का काम खत्म हो जाएगा क्या? तू नहीं पहुंचा तो अस्पताल बंद हो जाएगा? मुर्दा बोलने लगेगा कि वो कैसे मरा? तू दूल्हा है, जो तेरे बिना फेरे पूरे ना होंगे?

देख तेरे पास पांच मिनट हैं, बाइक साइड में लगा ले। अगर जेब में पैसे न हो तो मैं चालान भर देता हूं। कल आके मुझे यहीं इसी समय दे जाना। मैं घर लेने आया तो मुहल्ले में तेरी इज्जत का पंचनामा बन जाएगा। कानून तोड़ते पकड़े गए तो समझ लो हेलमेट में मक्खी घुस गई, मर जाएगी पर निकलेगी नहीं।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

राजसमंद आज कल और कल

आइए जानें अपने शहर को

इन पंक्तियों के लेखक के लिए गौरव का विषय है कि वह मेवाड़वासी है और भी यह दैवी सौभाग्य का विषय है कि वह कांकरोली वासी है। इससे भी आगे यह कि यह संयोग है कि वह श्रीनाथ जीए द्वारकाधीश प्रभु और चारभुजानाथ के धार्मिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संस्कारों से आभायित पर्यावरण में बड़ा हुआ है और इससे और आगे कि वह इतिहास विश्रुत उस संस्कृति रक्षक महाराणाओं की शौर्यभूमि में जन्मा जो राष्ट्रधर्म के निर्वहन के लिए आततायी वैदेशिक शासकों से भी दो दो हाथ करने से पीछे नहीं रहे।

मेवाड़ की इस धरा की विशेषता ही यह रही है कि वह राज्य, धर्म और लोक जीवन की त्रिवेणी बन सदैव परस्पर सामंजस्य के साथ प्रगति के सौपान पार करती रही। आज जिसे हम कांकरोली, राजनगर और संयुक्त रूप से राजसमन्द नाम से जानते हैं और जिसकी पहचान को अतिरिक्त ऊर्जा श्रीनाथ धाम नाथद्वारा से मिलती है, का फ्यूजन किए बिना इस भूभाग की पहचान ही अधूरी होगी।

यह सर्व विदित है कि भारतवर्ष की स्वतंत्रता के बाद विभिन्न राज्यों का एकीकरण इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना रही है। इससे पूर्व मेवाड़ राजपुताना का एक स्वतंत्र राज्य था। इसके अंतर्गत सोलह जिले या परगने थे और प्रत्येक जिले में मेवाड़ के महाराणा का अधिकार सम्पन्न प्रतिनिधि हुआ करता था। गिर्वा, छोटी सादड़ी एक पासन, चित्तौड़गढ़, राशमी, भीलवाड़ा, सहाड़ा, मांडलगढ़, जहाजपुर, राजनगर, सायरा, कुंभलगढ़, मगरा, बागोर, आसीन्द और कुआखेड़ा जिलों के अलावा नाथद्वारा, कांकरोली, एकलिंग, ऋषभदेव, चारभुजा, रूपनारायण देवस्थान कहलाते थे। इनमें से भी नाथद्वारा और कांकरोली को उदयपुर महाराणा द्वारा विशेष शासनाधिकार दिए हुए थे। मेवाड़ राज्य (उदयपुर) के समस्त जिलों के संचालन में सहयोग हेतु महाराणा के विश्वासपात्र जिन्हें सरदार कहा जाता था, की तीन श्रेणियां थीं, जो सोलह, बत्तीस और गोल के सरदार कहलाते थे। अस्तु, यह विभाजन और इनके अधिकार और स्वरूप पर चर्चा फिर कभी।

देवस्थान कांकरोली उदयपुर राज्य का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था, जहां के गोस्वामी धर्माचार्यों को उदयपुर, देवगढ़ आदि राज्य/परगनों से जमीनें भेंट किए जाने की परम्परा रही थी। इन जमीनों को डोली कहा जाता था। कांकरोली की जमीन भी किसी कालखंड में ऐसी ही डोली थी, जो छापली के खाकाजी रावत द्वारा भेंट की गई थी। परिणाम स्वरूप यह भूभाग खाका डोली कहलाया जो क्रमशः कांकडोली और कांकरोली हो गया।

यह एक संयोग ही कहा जाएगा कि ब्रजमंडल स्थित गोकुल में बिराजित द्वारकाधीश मंदिर के गोस्वामी गिरिधरजी महाराज की उदयपुर महाराणा जगतसिंह जी से भेंट हुई। यह समय था वि.सं. 1704- 1708 के मध्य का जब महाराणा जगतसिंह गोकुल यात्रा पर गए और द्वारकाधीश जी के दर्शन कर वहां की ऋतु अनुकूल सेवा और सादगी से प्रभावित हुए। वे वल्लभ संप्रदाय की तृतीय पीठ के आचार्य गो. गिरिधरजी की विद्वत्ता से प्रभावित होकर उनसे दीक्षित हुए और मेवाड़ का आसोटिया ग्राम भेंट किया। मेवाड़ में वल्लभ सम्प्रदाय के बीज वपन की यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी, जिसके माध्यम बने उदयपुर के महाराणा जगतसिंह जी।

कालांतर में जब राणा राजसिंह के समय ब्रज के मंदिरों पर मुगल शासक औरंगजेब के आक्रमण के बादल मंडराने लगे तब वि.सं 01721 में तात्कालीन तृतीय पीठाधीश द्वारकाधीश को लेकर अहमदाबाद होकर वि.स. 1726 को आसोटिया आ गए। यही समय था, जब वि. सं 01726 में श्रीनाथजी भी आगरा, कोटा, जोधपुर (चौपासनी) होकर वि. सं 01728 को सिंहाड़ (नाथद्वारा) पधार गए।

यह कहा जाना बहुत उपयुक्त है कि ब्रज की धर्म संस्कृति से मेवाड़ को परिचित कराना और स्थानीय आसोटिया, सिंहाड़ जैसे सुदूर वनप्रान्त के बीच गढ़ों में बसे धुर ग्रामीणों को धर्मनिष्ठ बना उनमें सुनागरिकता के संस्कार लाने का कृतकार्य किया राणाओं ने इन्हें नित्य प्रति के आनंद और उत्सव से जोड़कर इन ग्राम्यांचलों को दरिद्रता के अभिशाप से मुक्त करा अर्थोपार्जन का अवसर सुलभ कराया धर्माचार्यों ने क्षेत्र के सामाजिक उन्नयन से इन गांवों का भविष्य ही बदल गया।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

शुन्य बजट वाली प्राकृतिक खेती किसानों के लिए वरदान

जय जवान, जय किसान! इस नारे का उपयोग अधिकतर बातचीत के अंत में होता है, किन्तु मैं मेरी बात की शुरूआत आज इसी से करूंगी। किसान ये शब्द हमारी अर्थ व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है और उसी किसान के जमीन की बदौलत आज हम सभी जिन्दा हैं।

इस आधुनिक युग में सभी को आधुनिकता से बड़ा ही प्रेम है, परन्तु कोई किसानों की तरफ नहीं झांकना चाहता। 5 जुलाई 2019 को मोदी सरकार द्वारा जो बजट जारी किया गया, उसमें हमारी केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मलाजी सीतारमण द्वारा किसानो की आर्थिक हालत सुधारने हेतु एक ऐलान किया गया था, जो 0 बजट फार्मिंग। मेरा आज का विषय यही है कि **शून्य बजट वाली प्राकृतिक खेती किसानों के लिए वरदान।**

अब अगर मैं मेरे विषय पर जोर डालूं तो ये खेती है क्या? और आखिर ये होती किस प्रकार है? प्रकृति हमें सब कुछ देती है, लेकिन जब उसे देने की बात आए, हम सभी आधुनिकता में बहकर अंजान बनकर उसे यातनाएं देने में पीछे नहीं हटते, परन्तु शून्य बजट वाली प्राकृतिक खेती वह खेती है, जिसमें किसान कुदरती रूप से बिना किसी रासायनिक खाद और कीटनाशक के ज़मीन को उपज़ाऊ बनाते हैं और साथ ही वे गाय के गोबर में नीम, मिट्टी एवं अन्य प्राकृतिक पदार्थों को मिलाकर एक मिश्रण तैयार करते हैं। उस मिश्रण को बीजामृत कहा जाता है। फिर उसी बीजामृत में बीज बोए जाते हैं।

इस खेती की शुरुआत कर्नाटक के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक श्रीमान् सुभाष पालेकरजी ने 1990 में की थी और उन्हें पद्मश्री द्वारा सम्मानित भी किया गया।

किसान खेत में मरता है और उसका बेटा फौज में,
नेता देश में ऐश करता है और उसका बेटा विदेश में

आखिर ये स्थिति कब तक चलेगी। हमारे भारत में लेकिन इस स्थिति का हल निकल कर आई है ये खेती। इस खेती का उद्देश्य केवल इतना सा है कि किसानों को कर्ज से किस प्रकार बाहर निकाला जाए। क्योंकि किसान खुद को फंसा हुआ मानते हैं और मेहनत करने पर भी परिणाम न मिलने पर फांसी के फंदे पर लटक जाते हैं और कई राज्यों में तो दुर्गम बीज और महंगे बाजारों के कारण कृषि लागत बढ़ती है और परिणामस्वरूप किसान कर्ज में आ जाते हैं।

आखिर ये खेती किसानों के लिए वरदान किस प्रकार है? इस खेती की लागत काफी कम है। अन्य के मुकाबले जिस वजह से किसानों को मुनाफा अधिक होता है और साथ ही उनकी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी होती है। हम सभी इस चीज से 100 प्रतिशत परिचित हैं कि किसानों के लिए उनकी जमीन उनकी रोज़ी रोटी है और इस खेती के लिए वे अपने ही बेलों का इस्तेमाल करते हैं, इसका मतलब ये हुआ कि खेती में किसी भी ईधन का सीधा प्रयोग नहीं होता जिससे संसाधनों की बचत होती है।

जैसे कि मैंने आपको बताया इस खेती का शुभारंभ सुभाषजी द्वारा किया गया और धीरे धीरे ये खेती आंध्रप्रदेश में काफी प्रसिद्ध हुई और करीब 5 लाख से ज्यादा किसान इस खेती को अपना चुके हैं और करीब 13 प्रतिशत किसान इस खेती से अपनी जीविका को सुधार रहे हैं। यह खेती किसानों के लिए वरदान कुछ इस प्रकार साबित हुई कि इस खेती में केवल 10 प्रतिशत बिजली का ही उपयोग होता है, अन्य के बजाय जो किसानों के हित का कार्य साबित हुआ है। किसान हमारे अन्नदाता है, जो अन्न हमें उनसे प्राप्त हुआ, वो उनकी ही मेहनत और लगन का नतीजा है। अब मैं अपनी वाणी को यहीं विराम दूंगी कि अगर एक किसान हमारे बीच होता, तो हमसे क्या कहता ?

ज़मीन जल चुकी है, लेकिन आसमान अभी बाकी है
कुएं सुख चुके हैं, लेकिन उम्मीद अभी बाकी है
बारिश इस बार जरूर बरस जाना तुम
किसी का मकान गिरवी है तो किसी का लगान बाकी है

धन्यवाद।

प्रस्तोता :
नेहा लौहार
छात्रा
श्रीनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ बायो टेक्नोलोजी एंड मैनेजमेंट नाथद्वारा

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

ओटन लगे कपास, शराफत की पढ़ाई, नया नियम

मुझे मंजूर है संयम और शराफत से आचरण का नियम लागू होना, लेकिन सबसे पहले उन पर यही सख्ती से लागू किया जाए, जिनको खुद पर कोई नियम कानून कोई रुकावट कोई सीमा रेखा कोई मर्यादा का पालन करना, अपने शासकीय अधिकार का हनन लगता है। सिर्फ सोशल मीडिया पर झूठ, नफरत, असभ्य भाषा बिना आधार किसी को बुरा भला कहना बंद करवाना लाज़मी नहीं, सभ्य समाज में बड़े छोटे सभी को नैतिकता और सच्चाई का पास रखना ज़रूरी है। संक्षेप में मगर बिल्कुल साफ और तथ्यात्मक ढंग से विषय की बात करते हैं। सरकार कोई नेता जब कोई बात, कोई वादा, कोई आरोप किसी पर भाषण में खुली सभा में या फिर संसद विधानसभा में किसी अदालत में अपना पक्ष रखते हुए बोलकर लिखकर या किसी तरह से सामने लाता है, तब उसकी कही गई समझाई गई हर बात को ऐसे नियम कानून की कसौटी पर खरा साबित होना ही चाहिए और ऐसा नहीं होने पर उस पर कठोर करवाई की जानी चाहिए।

देश, जनता, समाज को झूठ से बहलाना, झांसे में रख कर सही को गलत और गलत को सच समझाने का काम देशभक्ति नहीं, अपराध है। संविधान की भावना का अनादर है, जो सत्ता पर बैठकर कभी नहीं किया जा सकता है। चुनाव में वादा किया, जो वास्तव में सच नहीं साबित हुआ, तब ये गुनाह माफी लायक कदापि नहीं हो सकता है। ऐसे अपराध की सज़ा पांच साल बाद चुनाव में हार ही काफी नहीं, बल्कि उनको एक पल भी शासन का अधिकार नहीं होना चाहिए। अपनी बात से पलटते ही उनका तख्ता पलट किया जाना चाहिए।

सरकारी आंकड़े झूठे हो, तो सरकार को रहने का अधिकार किसलिए और क्यों? कोई टीवी पर जनता को अपने किसी ढंग से निरोग होने का इश्तिहार देकर नाम, पैसा, शोहरत कमाता है, लेकिन वास्तव में लोग उनकी कही बात मानने के बावजूद निरोग होते नहीं, रोग बढ़ते जाते हैं, तब सिर्फ वही इक शख्स नहीं, उसके झूठ को जारी करने वाले सभी सहयोगी सहभागी, टीवी अख़बार या उनके गोरखधंधे से फायदा उठाने वाले मुजरिम हैं, लुटेरे हैं, उन पर सजा और जुर्माना लगा कर जिनकी जेब से पैसा गया, उनकी भरपाई की जानी चाहिए। सोशल मीडिया पर या टीवी, अख़बार पर ज़हर को अमृत बनाना, अपने कारोबार के बढ़ाने की खातिर उचित कैसे हो सकता है। सरकारी दफ़्तर में या पुलिस थाने या अदालत में डराने, धमकाने, रुतबा बढ़ाने को बिना कारण लोगों को अशिष्ट भाषा, अनुचित आचार व्यवहार से अपनी मनमानी करना रिश्वत लेकर घर भरना, क्या इसको किसी व्यक्ति अधिकारी शासक का विशेषाधिकार माना जाना चाहिए। किसी भी बहाने कोई भी मकसद बतलाकर आपराधिक आचरण को सही नहीं साबित कर सकते हैं।

व्हाट्सएप्प, फेसबुक, ट्विटर, सोशल मीडिया पर गदंगी नहीं होना काफी नहीं है, गंदगी कहीं भी नहीं रहनी चाहिए और शराफत सोशल मीडिया की नकली दुनिया से पहले हमारी वास्तविक दुनिया में होना अधिक ज़रूरी और महत्वपूर्ण है। वो कहानी याद है ना पापी को सज़ा देनी है, मगर पहला पत्थर वो मारे जिसने खुद कोई पाप नहीं किया हो। कमाल का विधान है, जिनके अपकर्मों की कोई गिनती नहीं कर सकता, वो हमसे हिसाब मांगेगे, अच्छे बुरे कर्म हर बोली, बात हर लिखी बात को परखेंगे कसौटी पर। इंसाफ़ का तराज़ू पकड़ने वाले से कोई सवाल नहीं पूछेगा कि आपका ये तराज़ू सभी को बराबर समझता भी है या नहीं। लेकिन उनके बाट बदल जाते हैं, लेने के अलग, देने के अलग अलग हैं। मगर जिनका आगाज ही झूठा हो, उसका अंजाम सच कैसे होगा, आपको सोचने की नहीं समझने की ज़रूरत है।

यहां नियम कायदे कानून बनते हैं, कागज़ पर, ज़मीन पर दिखाई नहीं देता। कोई भी कायदा कानून, बाल मज़दूरी, महिला सुरक्षा, शिक्षा और रोटी से लेकर जीने का बुनियादी अधिकार पहले से है, लेकिन बंद कानूनी किताब में वास्तव में कहां है। इंसान तो क्या पशु पक्षी, जानवर तक के लिए नियम कायदे कनून हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि गधों तक के लिए कानून बनाया हुआ है। हर गधे से दिन में आठ घंटे काम लेना, उसको दिन में चार बार भोजन, पानी के लिए अवकाश मिलना, उसके पांव पर रस्सी बांधने से पहले मुलायम कपड़ा बांधना कानूनी नियम है। इतना ही नहीं उसको उमस भरे मौसम में काम नहीं करवाने की भी शर्त रखी हुई है।

कितने कानून बनाकर रख छोड़े हैं। उनका पालन कोई नहीं करवाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात सभी ईमानदारी से कर्तव्य निभाने, निष्पक्षता की न्याय की व्यवस्था की शपथ उठाकर कुर्सी पर बैठते हैं, लेकिन अपनी शपथ कोई भी निभाता नहीं, याद तक नहीं। आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास। जिस देश की संसद में बड़े बड़े गंभीर अपराध के आरोपी बैठकर कानून बनाते हैं। कानून को समझते नहीं, उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। उस देश में बदलने को कोई कानून कारगर नहीं साबित हो सकता कभी भी।

आधुनिक व्यवस्था पर कुछ दोहे लिखे हैं, आखिर में आपके लिए हाज़िर हैं-

देश की राजनीति पर वक्त के दोहे

डॉ. लोक सेतिया नतमस्तक हो मांगता मालिक उससे भीख
शासक बन कर दे रहा सेवक देखो सीख।

मचा हुआ है हर तरफ लोकतंत्र का शोर
कोतवाल करबद्ध है डांट रहा अब चोर।

तड़प रहे हैं देश के जिस से सारे लोग
लगा प्रशासन को यहाँ भ्रष्टाचारी रोग।

दुहराते इतिहास की वही पुरानी भूल
खाना चाहें आम और बोते रहे बबूल।

झूठ यहाँ अनमोल है सच का ना व्योपार
सोना बन बिकता यहाँ पीतल बीच बाज़ार।

नेता आज़माते अब गठबंधन का योग
देखो मंत्री बन गए कैसे कैसे लोग।

चमत्कार का आजकल अदभुत है आधार
देखी हांडी काठ की चढ़ती बारम्बार।

आगे कितना बढ़ गया अब देखो इन्सान
दो पैसे में बेचता यह अपना ईमान।

डॉ. लोक सेतिया
नई दिल्ली

विनोद कुमार को इंडिया प्राइम आऊदर्स अवार्ड

जयवर्द्धन पत्रिका के नियमित युवा व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की को इंडिया प्राइम आऊदर्स अवार्ड 2021 से सम्मानित किया गया। साथ ही ज्ञानमुद्रा संस्थान मध्यप्रदेश द्वारा वर्ष 2021 का स्व. केशरी सिंह दुबे स्मृति युवा ज्ञानमुद्रा साहित्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया है।

ज्ञानमुद्रा संस्थान द्वारा खगड़िया बिहार के युवा साहित्यकार विनोद को युवा श्रेणी में तथा वरिष्ठ श्रेणी में यह सम्मान मध्यप्रदेश के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दुर्गा प्रसाद झाला को दिया गया है। विनोद विक्की ने संस्थान के वरूण माहेश्वरी तथा चयन समिति एवं प्राइम इंडिया के प्रति आभार प्रकट किया है। फॉक्सक्लूज संस्थान द्वारा प्राइम इंडिया 100 आऊदर्स की जारी फाइनल सूची में भी विनोद ने स्थान बना लिया है।

हिंदुस्तान टाइम्स, जी न्यूज एवं डेली हंट की संयुक्त मीडिया पार्टनर वाली फॉक्सक्लूज प्रा.लि. चंडीगढ द्वारा आयोजित इंडिया प्राइम आइकन अवार्ड के तहत प्राइम आऊदर्स अवार्ड 2021 के अंतिम राउंड में शार्ट लिस्ट 500 प्रविष्टि में से अंतिम 100 के लिए भी विनोद कुमार विक्की का चयन हुआ है। इस सम्मान हेतु राष्ट्रीय स्तर पर 4865 प्रविष्टि प्राप्त हुई थी, जिसमें वर्ष 2021 के लिए 100 लेखक का चयन किया गया। विनोद को इस वर्ष फरवरी में हिंदी अकादमी मुबई, हिंदी बाल साहित्य शोध संस्थान दरभंगा द्वारा तथा जनवरी माह में अलख इंडिया के सौजन्य से बिहार विप सभागार में आईएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष के हाथों सम्मानित किया जा चुका है।

इतिहास के निशानों में बीएल सामरा ने ढूंढी अपनी पहचान

हमारे राजसमंद जिले की शान में चार चांद लगाने वाले भारतीय जीवन बीमा निगम के सेवानिवृत्त अधिकारी ने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के वारिश बनकर उसके संरक्षण में जो अनूठा योगदान किया है, काबिले तारीफ है। हम इनके जज्बे, जुनून और साहस को दिल से सलाम करतें हैं। वे एक समर्पित और निष्ठावान अधिकारी के रूप में सदैव कार्यरत रहे। प्रलोभन और धमनियों को नजरअंदाज करते हुए ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन किया। इस कारण वे अपने कार्य क्षेत्र में किसी पहचान के मोहताज नहीं रहे। अपने विद्यार्थी जीवन से रचनात्मक लेखन और पत्रकारिता के क्षेत्र सक्रिय रहकर अन्याय के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी रहे और भारतीय जीवन बीमा निगम के साथ विपणन, प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक क्षेत्र में अभिकर्ता, विकास अधिकारी, शाखा प्रबंधक और प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अपनी भूमिका सफलता पूर्वक निर्वहन करने के साथ राजभाषा अधिकारी तथा विभिन्न प्रशिक्षण केंद्र पर संकाय सदस्य के रुप में बतौर प्रशिक्षक भी ड्यूटी को अंजाम दिया और इन सबके साथ 50 वर्षों से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के विविध अवशेष और अभिलेख इत्यादि का विपुल संग्रह जुटाने का उल्लेखनीय योगदान का उत्कृष्ट कार्य भी संपादित किया। उनके इस क्षेत्र में किए गए विशिष्ट योगदान के कई जिला मुख्यालय पर इन्हें सम्मानित किया गया।

हम आपकी मुलाकात करवा रहे हैं, हमारे जिले राजसमन्द की एक मशहूर शख्सियत बीएल सामरा से, जो भारतीय जीवन बीमा निगम के निवर्तमान प्रशासनिक अधिकारी है और हाल ही मंडल कार्यालय अजमेर से सेवानिवृत्त हुए हैं। अपने विद्यार्थी जीवन से ही सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े रहे सामरा ने छात्र जीवन में एक साप्ताहिक और एक पाक्षिक समाचार पत्र का संपादन किया।

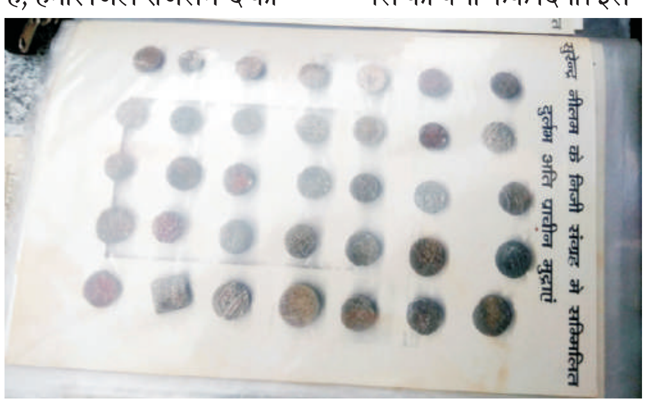

रचनात्मक लेखन और राजभाषा हिंदी से गहरा लगाव रखने वाले सामरा पत्रकारिता एवं साहित्य क्षेत्र में सुरेंद्र नीलम के नाम से पहचान रखते हैं और अपनी एक विशिष्ट अभिरुचि के कारण अपने कार्य क्षेत्र में मिली व्यापक शोहरत के कारण आज किसी पहचान के मोहताज नहीं है। वे पिछले 50 वर्षों से हमारी सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सामग्री का संचालन कर रहे हैं ।

राजस्थान के मेवाड़ अंचल में राजसमंद जिले के एक छोटे से

गांव आसन ठीकरवास में 8 जून 1958 को एक सामान्य परिवार में जन्मे सामरा 11 वर्ष की आयु में जब छठीं कक्षा के विद्यार्थी थे, तभी परिवार में घटी एक छोटी सी घटना ने सामरा के जीवन की दिशा बदल कर रख दी तथा जीवन का मकसद और मिशन तय कर दिया।

हुआ यह था कि इनके दादाजी ने जो मेवाड़ की रियासत में कामदार थे, इन्हें एक तांबे का पुराना पैसा दिया, जिसको अपनी बाल सुलभ बुद्धि से इन्होंने अनुपयोगी मानकर फेंक दिया। उनके दादा जो यह सब देख रहे थे। उन्होंने प्यार भरी डांट लगाते हुए इन्हें अपने पास बुलाया और पूछा कि पैसे को क्यों फेंक दिया। इस पर उन्होंने जवाब दिया कि यह पैसा पुराना और खोटा है, तो दादा ने उनके सिर पर हाथ फेरकर नसीहत देते हुए कहा बेटे। पैसा पुराना हो गया, तो क्या हुआ, मगर पैसा लक्ष्मी का रूप होता है और उसको फेंक कर उसकी बेकद्री नहीं करनी चाहिए। उन्होंने फिर आगे कहा कि दुनिया में ईश्वर ने ऐसी कोई चीज नहीं बनाई है, जो फिजूल और फालतू है। कुदरत ने जो कुछ भी इस दुनिया मे बनाया है, उस सबकी अपनी उपयोगिता है। भले ही हम नहीं जानते, मगर धरती का एक एक कण और वनस्पति का एक तिनका भी औषधि हो सकता है। दादाजी ने उन्हें समझाया ईश्वर की बनाई हुई, इस दुनिया में कुछ भी फिजूल और फालतू नहीं है।

अगर हमें हिफाजत करें, तो एक कोड़ी की चीज भी करोड़ की बन सकती है और हिफाजत नहीं करें, तो करोड़ की चीज भी कौड़ी

की बन जाती है। भले ही हमें समझ और जानकारी नहीं है, पर दुनियां में जिस किसी चीज का अस्तित्व है, उस सबकी अपनी उपयोगिता है। किसी वनस्पति का एक तिनका भी औषधि हो सकता है और इस वसुंधरा पर मिट्टी का एक एक कण और कंकड़ पत्थर की भी अपनी उपयोगिता है। भले ही हम उसके बारे में नहीं जानते और उसे बेकार और फालतू मानकर कूड़ेदान या कबाड़ी के हवाले कर देते हैं, मगर कभी कचरा और कूड़ा समझे जाने वाली सामग्री भी हमारी विरासत और धरोहर का हिस्सा हो सकती है। जब कूड़ा भी कंचन में बदल सकता है । अगर हम समझदारी और हिफाजत से चीजो का संरक्षण किया जाए।

बस फिर क्या था, दादाजी की डांट भरी नसीहत ने सामरा के जीवन का मकसद निर्धारित कर दिया और उन्होंने इसे जुनून के साथ अपने शौक और अभिरुचि सहित अपना मिशन बना दिया और आप एक पारखी की तरह पिछले 50 वर्षों से हमारी सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सामग्री का संचय करने में जी जान से जुटे हुए हैं। आज इनके संग्रह में सैकड़ो पांडुलिपियां, स्टैम्प पेपर, पोस्टकार्ड एवं विविध डाक सामग्री और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी प्रत्येक वह सामग्री जिससे हमारी बुजुर्गों की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की झलक मिलती है, उसका संग्रह करने में जी जान से जुटे हुए है।

आज उनके संग्रह में सैकड़ों घड़ियां, ताले, हस्तलिखित पांडुलिपियां, बेहतरीन किताबें, सिक्के, डाक टिकट, पोस्टकार्ड, स्टाम्प पेपर तथा हमारे बुजुर्गों की कला साधना के विविध नमूने, रियासतकालीन राजकीय पत्र व्यवहार, जन्म कुंडलियां जो 20- 25 फीट लंबी है। कलम दवात, लेखन सामग्री, पेन स्टैंड, लेम्प स्टैंड, इत्र की खूबसूरत बोतलें, इत्रदान फूलदान आदि सैकड़ों वस्तुओं के बेहतरीन नमूनों का नायाब खजाना है। इनकी श्रम साधना, इच्छाशक्ति और एक निष्ट संकल्प सहित अनवरत अग्रसर जीवन यात्रा आज के युवाओं के लिए प्रेरणा है। सामरा विरासत के वारिस बनकर उसकी हिफाजत के लिए जी जान से जुटे हुए हैं । हम इनके इस जज्बे, साहस और जुनून को सलाम करते हैं ।

जिनका काम है, उनकी पहचान
जो बढ़ाते हैं हमारे शहर का मान
बीएल सामरा नीलम है श्रीमान
ऐसी शख्सियत का अभिनन्दन, प्रणाम
उनके जज्बे जूनून और साहस को सलाम

सामरा का कई संस्थाओं ने किया सम्मान

मीडिया फोरम और पत्रकार संघ जार के सक्रिय सदस्य बी एल सामरा को विरासत संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान तथा कोरोनाकाल में रचनात्मक लेखन के लिए बैंगलुरु की संस्था गोल्डन क्लब ग्रुप द्वारा स्मार्ट इंडियन सिटीजन के राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया है। सामरा को स्मार्ट इंडियन 2021 के राष्ट्रीय सम्मान पत्र भेजा गया। सामरा विरासत सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष और प्रमुख मैनेजिंग ट्रस्टी है तथा अजयमेरु टाइम्स के सम्पादकीय सलाहकार भी हैं । इनका सपना है युवा पीढ़ी को हमारी गौरवशाली संस्कृति और विरासत से रूबरू करवाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान और संस्कार के लिए जागरूक करना। इसी मकसद और मिशन के लिए इन्होंने विरासत सेवा शोध संस्थान की स्थापना की है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का परचम देश विदेश तक फहराने के लिए विरासत गौरव केन्द्र के नाम से म्यूजियम की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। इसके अलावा गोल्डन ग्रुप ऑफ कम्पनीज द्वारा महाराणा प्रताप जयंती पर विश्व शांति एम्बेसडर सम्मान से सम्मानित किया। सामरा को यह सम्मान लाइफ टाइम एचीवमेंट के रुप मे अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया। उनके साथ यह सम्मान डॉ. सोहनराज तातेड को भी प्रदान किया गया है, जो सिंघानिया यूनिवर्सिटी जोधपुर के वाइस चांसलर रह चुके हैं ।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

श्रेय लेने की होड़

सनातन हिन्दू धर्म में अनासक्त कर्म को महत्व दिया गया है। श्रीकृष्ण ने गीता में भी फल की इच्छा के बिना कर्म करने की शिक्षा दी है। हनुमानजी ने प्रभु श्री राम के दुर्गम कार्यों में सफलता प्राप्त की, मगर जब उनकी प्रशंसा की जाती है, तो वे कहते हैं- ''सो सब तव प्रताप रघुराई, नाथ न कछु मोर प्रभु ताई'' अर्थात् हनुमानजी कहते हैं कि यह सारे कार्य रघुनाथ जी आपके ही प्रताप से हो रहे हैं, इसमें मेरी कोई बढ़ाई नहीं है। इस तरह हमारे मनीषियों ने सदैव अपने कार्यों का श्रेय बड़ों को देना सिखाया है, मगर ये बाते सतयुग व द्वापर युग की हैं। आज के कलियुग में तो श्रेय लेने की होड़ मची हुई है। अपने कार्यों का तो श्रेय बढ़चढ़ कर लेते ही है। दूसरे के कार्यों का भी श्रेय खुद लेने से नहीं चूकते हैं। आजकल राजनीति में सभी नेता अपने साथ कुछ अनुचर पालते हैं, जिन्हें चमचे के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इन लोगों का काम सिर्फ सोशल मीडिया पर अपने नेता की वाह वाही करना है।

मोहल्ले में कोई रोडलाइट ठीक हुई तो उसका श्रेय अपने नेता को देते हुए फोटो वायरल करना, इनका रोज का काम है। किसी दिन यदि एक नेता कृषि मंत्री से मिला, तो दूसरे दिन सभी अखबारों और फेसबुक पर नेताजी की वाहवाही शुरू हो जाती है कि नेताजी के अथक प्रयासों से बहुत जल्दी क्षेत्र में कृषि सुविधाओं का विकास हो जाएगा और जनता भी खुश हो जाती है। चारों तरफ वाहवाही के फ्लेक्स होर्डिंग लगा दिए जाते हैं, जिसमें नेताजी आदमकद चित्र में हाथ ऊपर कर जनता को आशीर्वाद देते हुए दिखाए जाते हैं। इस तरह कृषि के मुद्दे पर किसी नेता का श्रेय लेना विरोधी पार्टी के नेता को नागवार फिल होता है। दूसरे दिन कृषि मन्त्री को विरोधी नेता भी क्षेत्र की सिंचाई व्यवस्था में सुधार का ज्ञापन सौंपकर फोटो खिंचवाते हैं और जनता को फिर एक बार खुश होने के लिए कहा जाता है। इस तरह कार्य ढेलेभर का होता नहीं, मगर झूठा श्रेय लेने का दौर चलता रहता हैं और इन नेताओं के चमचे हर बार फेसबुक, वाट्सेप पर लड़ते रहते हैं। इनका लड़ने का कारण यह नहीं कि काम नहीं हो रहा, बल्कि इसलिए लड़ते हैं कि उस मुद्दे पर फोटो खिंचवाने का हक किसका है। बार- बार के ज्ञापन और फोटो खिंचवाने के दौर के बाद कभी छोटी मोटी उपलब्धि भी मिलती हैं, तो दोनों पार्टियों के चमचे फिर से फेसबुक व वाट्सएप पर श्रेय लेने की लड़ाई में जुट जाते हैं। जिसे देख कर आमजन का मनोरंजन भी होता रहता है। यहां श्रेय की लड़ाई के साथ फीता काटने की लड़ाई भी मनोरंजक होती है। केन्द्र की योजना में सांसद के फीता काटने से पहले ही विरोधी पार्टी के विधायक कई बार फीता काट देते हैं, तो दोनों पार्टियां आमने सामने हो जाती है। इस तरह कई बार एक ही योजना एवं कार्य के दो- दो बार फीते काटकर श्रेय का बंटवारा किया जाता हैं।

ये श्रेय के भूखे नेता यूं तो कुछ काम किए बगैर भी हर जगह श्रेय लेने का मौका नहीं छोड़ते हैं। मगर इनके चुनाव प्रचार में बड़ी संख्या में लोगों को इकट्ठा कर कोरोना बांटने का श्रेय लेने से क्यों कतराते हैं? बढ़ती पेट्रोल- डीजल व रसोई गैस की कीमत से जनता को परेशान करने का श्रेय क्यों नहीं लेते हैं ?

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

आजीवन नंगे पैर और खादीधारी देश प्रेमी भंवरलालजी जोशी

सन् 1857 में आजादी के लिए की गई क्रांति भले ही असफल हो गई, पर उसने जो आजादी की चिंगारी प्रज्वलित की, वह अंदर ही अंदर इस तरह पूरे भारत में धधकती रही कि सन् 1942 के आते आते महात्मा गांधी का नेतृत्व पा शोलों में तब्दील हो गई। पूरे भारत में कई नौजवान भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े और तन-मन-धन से एक जुट हो देश को आजाद कराने में जुट पड़े।

उन्हीं लाखों, हजारों नौजवानों में मेरे क्षेत्र के नौजवान स्व. श्री भंवरलाल जी जोशी भी आजादी की इस लड़ाई में अपना योगदान देने में पीछे नहीं रहे। स्व. भंवरलाल जी जोशी का जन्म 23 अगस्त 1923 को एक साधारण से निर्धन परिवार में हुआ, आपके पिताजी रसोई बनाने का कार्य किया करते थे और अपना मूल निवास स्थान छोड़कर नाथद्वारा की नगरी में रहने लगे थे। वहीं भंवरजी जोशी की प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा हुई और 16 वर्ष की उम्र में आपने 7 रुपए महीने पर श्रीनाथजी के मंदिर में अपना कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही आप साहित्य से जुड़कर साहित्य का अध्ययन भी करते रहे और आपने साहित्य रत्न की परीक्षा भी पास कर ली। साहित्य रत्न की उपाधि उन दिनों बहुत महत्व रखती थी, तभी महात्मा गांधी के आह्वान पर 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन पूरे भारत में जोर शोर से प्रारम्भ हो चुका था, आप भी अपनी मंदिर की नोकरी छोड़ इस आन्दोलन में कूद पड़े, अपने कई साथियों के साथ आपने जन जागरण, सभाएं और जुलूस निकाल कर अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ बिगुल फूंक दिया। आप गिरफ्तार कर लिए गए और अपने 30 साथियों के साथ जेल में डाल दिए गए। जेल से छुटते ही आपने आजीवन नग्गे पैर रहने और खादी ही पहनने का संकल्प ले लिया, जिसे उन्होंने ताउम्र निभाया।

समयानुसार कांकरोली के एक प्रतिष्ठित घराने की लाडली हीरा देवी से आपका विवाह हुआ और आप अपने घर गृहस्थी में कदम रखा। आपके आचार विचार में वही देश भक्ति और जन सेवा का भाव बनाए रखा। आपके पांच पुत्र श्री राज कुमार, नवनीत, नरेश, अशोक, कमलेश व दो पुत्रियां सुशीला (दादु) और कुमुद हुई। आजादी के बाद जब कांग्रेस पार्टी ने कांकरोली में अपना कार्यालय खोला तो श्री भंवरजी को कार्यालय का प्रभारी बना कांकरोली स्थापित कर दिया। सन् 1948 से सन् 1951 तक आप कांग्रेस कार्यालय के प्रभारी पद पर अपनी सेवाएं देते रहे, इस दौरान आपने कई महत्वपूर्ण कार्य किए छुआछूत निवारण, पिछड़ी जनजाति की कुप्रथा को समाप्त कर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का आपने भरसक प्रयास किया, आप दिन- रात इन्हीं कामों में लगे रहते थे, बंजारों और बागरिया जाति में आपने कई कार्य किए उनके उत्थान के लिए आप दिन रात लगे रहते थे, इस क्षेत्र का पहला बागरिया जाति का चुन्नीलाल आपही के प्रयास से अपनी पढ़ाई पूरी कर राजकीय सेवा में लगा।

सन् 1957 में श्री निरंजननाथ जी आचार्य और श्री भंवरजी जोशी मेला सम्पन्न कराने के बाद लौट रहे थे, तो पड़ासली गांव के पास उनकी जीप का टायर पंचर हो गया, ड्राईवर श्री खुदुखां जी टायर ठीक कराने के लिए राजसमंद आ गए। रात का समय था क्या करें, क्या न करें इसी उधेड़बुन में जोशीजी ने गांव से एक पेट्रोमेक्स मंगवा लिया और निरंजननाथ जी के साथ कागज पैन लेकर बैठ गए और एक औद्योगिक संस्था सघन क्षेत्र विकास समिति की योजना को विस्तार से कागज पर उतार लिया। दूसरे दिन राजसमंद आ उसकी फाइल उदयपुर जिलाधीश से पास करा हाथों हाथ निरंजननाथजी आचार्य उसे जयपुर ले गए और कुछ ही दिनों में सघन क्षेत्र विकास समिति राजसमंद की नींव रख कार्य प्रारम्भ किया।

कुटीर उद्योग के आधार पर लोगों को रोजगार से जोड़े जाने लगा, धीरे धीरे कई कुटीर उद्योग जैसे लकड़ी का उद्योग, लोहे का उद्योग, साबुन का उद्योग, माचिस का उद्योग, ऊनी कंबल का उद्योग आदि कई कुटीर उद्योग सघन क्षेत्र विकास समिति ने प्रारंभ कर दिए, जिससे क्षेत्र के कई पुरूषों और महिलाओं को रोजगार का अवसर मिला और आज भी यह समिति इसी गति से अपना कार्य कर रही है, बल्कि इसमें और भी विस्तार हुआ है ।

सन् 1958-59 में पंचायत समिति राजसमंद में आपकी सेवाएं प्रारंभ हो चुकी थी, आपने कई उत्कृष्ट कामों को अंजाम दिया, किसानों को उन्नत बीज, खाद उपलब्ध करा किसानों में खेती के प्रति जागरूकता की लहर पैदा की। आपने अपने क्षेत्र के 80 किसानों के साथ जयपुर से लगभग 40 दिनों की भारत दर्शन यात्रा भी की। किसानों के साथ साथ सम्पूर्ण भारत की यह यात्रा बड़ी लाभदायक रही। अन्य प्रांतों के किसानों द्वारा दी गई जानकारी प्राप्त कर किसान अपने खेतों में भी अपनाने लगे, किसान व कृषि विकास के लिए आप सदैव जी जान से जुटे रहे। सहकारीता के उद्देश्य के साथ आपने कई सहकारी समितियां गांव गांव में बनाई और उसका लाभ भी किसानों को मिला। आप जहां भी जाते, कहते, एक सबके लिए, सब एक के लिए, यही सहकारिता का मूल मंत्र है। सन् 1972 में आपका प्रमोशन हुआ और आप पाली में पंचायत प्रसार अधिकारी के पद पर चले गए, आपने वहां भी पूरी निष्ठा के साथ किसानों की भलाई का कार्य किया और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले पुनः कांकरोली आ गए।

सघन क्षेत्र विकास समिति ने आपके आने का पुरजोर स्वागत किया और सभी ने मिलकर आपको सघन क्षेत्र विकास समिति का मंत्री बना दिया और वे सघन क्षेत्र विकास समिति को नई ऊंचाईयां देने के लिए अपना कार्य करते रहे। आपने जुगनू माचिस, राजहंस साबुन, ऊनी कम्बल, लकड़ी का उद्योग और लोहे के उद्योग में बहुत तेज गति से कार्य करना प्रारम्भ किया। उन दिनों चमड़े के चरस हुआ करते थे, आपने लोहे के चरस का चलन प्रारम्भ कराया, जिससे किसानों को बहुत फायदा हुआ।

सन् 1980 में अचानक हृदय गति रूक जाने से आप देवलोक सिधार गए। ऐसे कर्मठ, मिलनसार, मृदुभाषी, विचारवान और चिंतनशील व्यक्तित्व को मेरी हृदय से भावभिनी श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की कांकरोली
मो. 98284-75288

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति एडवरटाइजिंग

सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

वायरस रा खेंचो कान : सिस्टम रो राखो मान

देस में न कम्पूटर में काईस फरक नी वेवे। दोई सिस्टम ऊं चाले। जतरो जूनो कम्पूटर वे वतराई वणी में वाइरस वे। आपाणे देस रो सिस्टम दनिया में सबाऊं पुराणो न ठावो है। अणीरी बोली- चाली, रेणी- सेणी न वात वैवार री कठेई दूजी जोड़ नी मलेला। पण टेम रे लारे अणी में नरी कांतराईयां आईंगी न घणा वाइरस वळी गिया। कोई वाइरस बारला देसाऊं आया तो कोई अठारा जाया न बापोतीवार। वे जणी वाटकी में खावे वणीस में काणा करता जावे न कबदां करता जावे। अस्या हली मलीन रेवे जाणे दूध में पाणी। वे इदोई लागे ज्यूं सिस्टम ने माइने रो माइनेईस पोलो करी नाके। ऊपरे ऊं देखो तो बरबड़ो नी।

कम्पूटर में कस्यो बी नवाऊं नवो सिस्टम नाको, ये वायरस वणी ने धूळ- धाणी करवा में काईस कसर नी राखे बळे। सोफ्टवेयर री तो वात ई रेवा दो, ये वायरस तो हारड डिस्क रो बी अताणो काड़ी देवे। एन्टी वायरस नकाईन बी कतराक नकावो। नी नकावो तो हंगळा वायरस मलीन हवाई जाज जस्या भन्ना- भोट सिस्टम ने बी कीड़ी चाले जस्यो करी देवे। वाई लागे तो ठाम रो रास करी मेले। सिस्टम कटर- कटर चाले तो एक घड़ी रो काम एक वरस में बी पूरो नी वे। एक सेकिन में हेंग फाइलां अळोप परी वे। पछे जा रे भैंस पाणी में।

केवे है के दनिया में पापारामो न हाळाबोळ नरोई वदी जावे तो कोई न कोई सिस्टम री रक्सया खातर एन्टीवायरस अवतार लेवे। राम जी न किसन जी जदीस तो परकट विया। दूजूं वणाने अवतार लेवा री जरूत नी ही। अबाणु रा सिस्टम में अनाथाग खराबी वेवा लागी तो अन्ना हजारे न रामदेवजी जस्या एन्टी वायरस काम हकळ्यो।

वे केवे है के पेली तो हेंग वायरसां ने ठावा करो न पछे वणाने खूणे- खूणे हांकड़े गालो। तपती या है के अणा वायरसां री ओळख पैचाण मसकल है। ओळखो लेवो तो होरे हा काबू में करणो हांसी न रोळ रो काम नी है। जबरा वायरस हारू एन्टीवायरस बी जबरो चावे। एन्टीवायरस कुंवारा वे तो वायरसां री खाटली बांधी नाके। वायरसां भूलो मती के जो देस परम कम्पूटर वणाई सके वठे थाणो डाव नी लागेला। एक बटन दबावा में ईस थाणो खोज परो जावेला।

अबे देखणो यो के अबके वायरसां री जीत वेवेला के एन्टी वायरसां री फतेह। दोयां री सेना आमे- हामे डटी लगी है।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार, उदयपुर
मो. 9001295523, 9414342523

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक
कराएं प्रति:
94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर अब आपकी जुबानी..

अब आप भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. कुडनकुलम में 5वीं परमाणु ऊर्जा इकाई का निर्माण शुरू हुआ है, इस इकाई का निर्माण किस देश के सहयोग से किया जा रहा है ?
2. यूरोपियन मेडिसिन एजेंसी (EMA) ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (SII) द्वारा निर्मित किस वैक्सीन को ग्रीन पास के लिए अनुमोदित टीकों की सूची से बाहर कर दिया है।
3. मलेरिया को मिटाने के 70 साल के प्रयास के बाद 30 जून 2021 को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किस देश को मलेरिया मुक्त प्रमाणित किया गया है।
4. 29 जून 2021 को एक "Enforcing Contracts Portal" लॉन्च किया है। Enforcing Contracts Portal ने पूरे भारत में आसान व्यापार को बढ़ावा देने और अनुबंध प्रवर्तन व्यवस्था (Contract Enforce men Regime) में सुधार के उद्देश्य से इस पोर्टल को लॉन्च किया है। इस पोर्टल को किस विभाग में लॉन्च किया है ?
5. DRDO द्वारा परीक्षण की गई नई पीढ़ी की परमाणु सक्षम मिसाइल का नाम क्या है ?
6. हाल ही में किस भारतीय को फुकुओका पुरस्कार 2021 के तीन प्राप्तकर्ताओं में से एक के रूप में चुना गया है।
7. शुरुआत में FAME योजना 1 अप्रैल 2019 से तीन साल की अवधि के लिए लागू की जानी थी। अब यह 31 मार्च 2024 तक लागू रहेगी। यह योजना किस क्षेत्र से संबंधित है ?
8. भारत का पहला रेबीज मुक्त राज्य कौनसा बन गया है।
9. भारत की किस तीरंदाज ने पेरिस में आयोजित विश्व कप चरण III में एक ही दिन में स्वर्ण पदक अपने नाम किए।
10. भारत के किस राज्य/ केन्द्र शासित प्रदेश में वायु सेना स्टेशन पर मानवरहित हवाई वाहनों द्वारा दोहरे विस्फोट किए गए।

उत्तरमाला

(1) रूस के (2) कोविशील्ड को
(3) चीन को (4) न्याय विभाग
(5) अग्नि पी (प्राइम)
(6) प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ को
(7) इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण से। Faster Adoption and Manufacturing of Electric Vehicles
(8) गोवा (9) दीपिका कुमारी ने
(10) जम्मू एवं कश्मीर

बिन फेसबुक सब सून

स्मार्ट फोन जीवी इंसान बगैर मीडिया के तो रह सकता है, लेकिन सोशल मीडिया के बिना नहीं। मई के अंतिम सप्ताह में जब कोरोना के संभावित तीसरी लहर से भी ज्यादा खतरनाक फेसबुक बंदी की ख़बर आई तो उपभोक्ताओं में घबराहट और बेचैनी उत्पन्न हो गई। वैसी ही जैसी नोटबंदी के नाम से कालाधन के मालिक की।

महिला उपभोक्ता का ऑक्सीजन लेवल ये सोच सोच कर घटने लगा कि मेकअप प्लस, ब्यूटी एप्प आदि के द्वारा परिमार्जित की हुई अपनी सुंदर सुंदर तस्वीरें, किचन में बने दाल- भात चोखा की तस्वीरें, बर्थ डे सालगिरह की तस्वीरें आदि फेसबुक और व्हाटसएप स्टेटस पर चेंपकर वाऊ, नाइस, ब्यूटीफुल, लुकिंग गुड आदि कमेंट्स हासिल करने का सुख उनसे छीनने वाला था।

फेसबुक की बंदी से सबसे ज्यादा प्रभाव फेसबुकिया कवि और साहित्यकार की इम्यूनिटी पर पड़ने वाला था। दिन में तीन टाइम फेसबुक लाइव कवि सम्मेलन में उपस्थित रहने वाले और चौदह व्हाटसएप साहित्यिक समूह के एडमिन वैसे ही बेरोजगार होने वाले थे, जैसे लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूर।

फेसबुकिया गालिब, परसाई, प्रेमचंद खौफजदा थे। आईसीयू में शिफ्ट होने जैसी स्थिति आ गई थी। प्रति मिनट शायरी, कविता, गीत- गजल, कहानी, व्यंग्य का लूज मोशन करने वाले तथा दैनिक ऊलजलूल टाइम्स में प्रकाशित रचनाओं की प्रदर्शनी वाली इनकी दुकान पर लॉकडाउन जो लगने वाला था। जरूरतमंदों में दो केला और छह मास्क बांटकर खींची गई सेल्फी को एफबी पर चिपकाने वाले समाजसेवी छुटभैये नेताजी व्यथित थे।

किसी मुद्दे पर सरकार और विपक्ष को गरियाने या महिमामंडन करते हुए एक दूसरे से फेसबुकिया युद्ध करने वाले विभिन्न राजनीतिक पार्टी के भक्त और चमचे आपस में बकथोथी सुख खोने की आशंका से त्राहिमाम थे। सभी हलकान थे, व्यथित थे, बेचैन थे, किंतु फेसबुक का दो यूजर वर्ग ऐसा था, जिसे एफबी बैन या बंदी की खबर से कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि इनके अंदर सोशल मीडिया महामारी का एंटीबॉडीज पहले ही तैयार हो चुका है। इनमें से एक वर्ग वो है, जो सप्ताह या महीने में एकाध बार फेसबुक खोल कर मित्रों के सभी प्रकार के पोस्ट को बिना पढ़े धड़ाधड़ लाइक ठोक देता है तथा दूसरा वर्ग वो है, जो प्रतिदिन केवल गुड मार्निंग और गुड नाइट पोस्ट करने के लिए ही फेसबुक लॉगइन करते हैं। बहरहाल फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाटसएप के निर्बाध जारी रहने से उपभोक्ता का ऑक्सीजन लेवल मेंटेन है और वो फीलगुड कर रहे हैं।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, बिहार

वरिष्ठ साहित्यकार चतुर कोठारी द्वारा संकलित कुछ कहते हैं शब्द, कविता संग्रह की पुस्तक का विमोचन किया गया।

लोक कवि चतुर कोठारी के 'कुछ कहते हैं शब्द'

28 फरवरी सन् 2021 को संबोधि उपवन में श्री शुभकरण जी महाराज के सानिध्य एवं साहित्यकार व श्रोताओं की उपस्थिति में श्री चतुर कोठारी के एक और काव्य संग्रह का विमोचन किया गया। भाई श्री कोठारी के इस नए काव्य संग्रह की भूमिका में डॉ. राकेश तैलंग ने चतुर कोठारी को परिष्कृत संवेगो का रचनाकार बताया है। उनकी कविता के भावों को देखते हुए शत प्रतिशत सच प्रतीत होता है, उनकी रचनाओं में सरलता, सीधी सपाट बात करने का अंदाज उन्हें लोक कवि के रूप में स्थापित करता है। उनके द्वारा लिखी गई कविताएं मन मस्तिष्क में एक हलचल सी पैदा करती है और यही कला कोठारी जी को एक मजा हुआ लोक कवि मानने को मजबूर करती है।

85 वर्ष की लंबी उम्र के बावजूद उनकी सोच, लगन और कार्य करने की क्षमता इस बात का धोतक है, वह सच्चे मायने में एक आदर्श कवि हैं। इस उम्र के पड़ाव में भी वह हर साहित्य के आयोजनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। एक समर्पित साहित्यकार की तरह हर आयोजन में दिखाई देते हैं। इस पुस्तक में उन्होंने कई अच्छी- अच्छी रचनाओं को संग्रहित कर शब्दों को बोलने पर मजबूर किया है।

5 वर्ष की लंबी उम्र के बावजूद उनकी सोच, लगन और कार्य करने की क्षमता इस बात का द्योतक है व सच्चे मायने में एक आदर्श कवि हैं। इस उम्र के पड़ाव में भी वे हर साहित्य के आयोजनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। एक समर्पित साहित्यकार की तरह हर आयोजन में दिखाई देते हैं। इस पुस्तक में उन्होंने कई अच्छी- अच्छी रचनाओं को संग्रहित कर शब्दों को बोलने पर मजबूर किया है।

जैसे-

सूरज चांद बनकर हम जगत में ज्योति लाएंगे
सरित की धारा बनकर हम मात् आंगन सजाएंगे
धरा के गीत गाएंगे गगन परचम उड़ाएंगे

सावन भादो की धरती पर
लहरों से जब जब गीत उठे
मैं वीरही डर को ले आई
पर आंसू पोछने वाला नहीं
कोई दीप जलाने वाला नहीं है

जब चमन मिला तो
उड़ना सीखा ही नहीं
ओ जब उठना सिखा तो
चमन मिला ही नहीं

राम का देश यह
मर्यादा का देश अब
प्रण तोड़ हो गया
कृषि प्रधान देश अब
कुर्सी प्रदान हो गया

कुछ नहीं कहते हैं
साइन कर देते हैं
साहब बड़े अच्छे हैं
पर कान के कच्चे हैं

दम बनाया हमने
साथ चलने को
हमें तो पीछे छोड़ गए
आगे बढ़ने को

कीड़ी जतरो कमावे
अन हाथी जतरो खावे
वह मनक कदी भी
ऊपरले पाने नी आवे।

अफ़जल खां अफ़जल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की कांकरोली
मो. 98284-75288

क्या कोरोना वैक्सीन को पेटेंट के दायरे से बाहर लाया जाना चाहिए?

वर्ष 1955 में जब जॉनास साल्क ने जब पोलियो वैक्सीन का आविष्कार किया, तब उनके एक मित्र ने उनसे पूछा कि क्या वे इसका पेटेंट करवाएंगे? तब उन्होंने जवाब दिया क्या सूर्य का पेटेंट करवाया जा सकता है? पृथ्वी जिसके चारो ओर घूमती है, क्या उस वस्तु को पेटेंट कोई मनुष्य कर सकता है?

परन्तु आज बात पूरी तरह बदल चुकी है। अब वैक्सीन किसी मल्टीनेशनल कंपनी की नोट छपने वाली मशीन है और पेटेंट उनकी वैक्सीन पर प्रभुसत्ता का प्रमाण।

कोरोना महामारी में वैक्सीन ही एकमात्र उपाय है, जिसने निराशा से घिरी मानव जाति के अंदर एक उम्मीद जगाई है। वर्तमान में विश्व में 15 ऐसी कंपनियां है, जो वैक्सीन बना रही है। इनमें से 2 भारतीय है व शेष विदेशी कंपनियां है। अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि विश्व की आबादी लगभग 800 करोड़ है और वैक्सीन बनाने वाली कंपनियां केवल 15, जो कि बेहद कम है। भारत की बात करें, तो यह 2 ही कंपनियां है, जो वैक्सीन बना रही है- सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बायोटेक।

160 करोड़ की आबादी वाले हमारे देश में 2 कंपनियां पूर्ण नहीं है। दावा है कि यदि ये दोनों कंपनियां महीने की 8 करोड़ डोज भी बनाती है, तो पूरे भारत में पूर्णतया वैक्सीनेशन होने में तीन साल से भी ज्यादा का समय लग जाएगा। पूरे विश्व की बात करें तो स्थिति ज्यादा खराब है। यदि वैक्सीन बनाने के अधिकार ज्यादा कंपनियों को दिए जाए, तो समस्या कुछ हद तक सुलझ सकती है। विकासशील व गरीब देशों की हालत तो और भी ज्यादा गंभीर है।

कई देश है, जो केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के जरिए ही वैक्सीन हासिल कर पा रहे हैं। इसीलिए वैक्सीन को पेटेंट के दायरे से बाहर लेना अति आवश्यक है। परन्तु इसमें परेशानी क्या है?

सन् 1955 में WTO ने टीआरआईपीएस का गठन किया। टीआरआईपीएस एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है, जिसमें बिद्धिक संपति के अधिकारियों के न्यूनतम मनको को तय किया गया। वैक्सीन भी इसी श्रेणी में आती है। अतः वैक्सीन को पेटेंट के दायरे से बाहर लेना इस संधि (नियमों) का उल्लंघन होगा। वैक्सीन ने वैज्ञानिकों के कई महीनों की मेहनत और कठिन प्रयासों का फलस्वरूप है।

अक्टूबर 2020 में भारत व दक्षिण अफ्रीका ने WTO के समक्ष TRIPS में कुछ बदलाव के सुझाव रखे थे, जिसमें वैक्सीन को पेटेंट के दायरे से बाहर लाने का सुझाव भी शामिल था। WTO इस मुद्दे पर 10 मीटिंग्स कर ली है, परन्तु सभी विफल रही। हाल ही में अमेरिकी सरकार के बयान ने थोड़ी राहत दी है, जिसमें वे वैक्सीन पेटेंट को अस्थाई रूप से कुछ समय अंतराल के लिए हटाने पर सहमति प्रदान कर रहे हैं।

वैक्सीन पेटेंट को हटाने को लेकर भारत व साउथ अफ्रीका समेत अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, न्यूजीलैंड व चीन अपनी सहमति रख रहे है। वहीं दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, जापान, नॉर्वे व यूके इससे असहमत है। वैक्सीन बनाने वाली बड़ी कंपनिया जैसे मोडर्ना, फाइजर, ऑक्सफोर्ड आदि भी इससे सहमत नहीं है। उनकी मुख्यतः 2 दलील है।

(1) नई कंपनियों को कच्चा माल प्रर्याप्त मात्रा में मिलना मुश्किल है।

(2) फर्जी या गलत वैक्सीन के कारण लोगों को जान का खतरा भी हो सकता है।

WTO 164 देशों का संगठन है। यदि पेटेंट के दायरे से वैक्सीन को बाहर लाना है, तो सभी की मंजूरी होना बेहद आवश्यक है। यह महामारी का दौर कईयो के मुनाफे व फायदे का मौका भी है, परन्तु इस समय मुनाफे को दरकिनार कर वैश्विक उदारता का परिचय देना ज्यादा आवश्यक है।

वैभव सिंह चारण
MBBS 1st year, At SPMC,
PBM HOSPITAL BIKANER)
Kumbha nagar,
Near RK Hospital, Rajsamand
Mob no. 7073173432

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
जयवर्द्धन NEWS
YouTube Channel Jaivardhan News

Suspension प्रथा

यूरोप का एक देश है नार्वे। वहां कभी जाइएगा तो यह सीन आम तौर पर पाइएगा। एक रेस्तरां है। उसके कैश काउंटर पर एक महिला आती है और कहती है- "5 Coffee, 1 Suspension".

फिर वह पांच कॉफी के पैसे देती है और चार कप कॉफी ले जाती है। थोड़ी देर बाद एक और आदमी आता है, कहता है- "4 Lnch, 2 Suspension" !

वह चार Lnch का भुगतान करता है और दो Lnch packets ले जाता है।

फिर एक और आता है आर्डर देता है-

"10 Coffee, 6 Suspension" !

वह दस के लिए भुगतान करता है, चार कॉफी ले जाता है।

थोड़ी देर बाद एक बूढ़ा आदमी जर्जर कपड़ों में काउंटर पर आकर पूछता है-

"Any Suspended Coffee ?"

काउंटर गर्ल मौजूद कहती है- "Yes !"

और एक कप गर्म कॉफी उसको दे देती है।

कुछ देर बाद वैसे ही एक और दाढ़ी वाला आदमी अंदर आता है, पूछता है- "Any Suspended Lunch ??"

तो काउंटर पर मौजूद व्यक्ति गर्म खाने का एक पार्सल और पानी की एक बोतल उसको दे देता है और यह क्रम एक ग्रुप द्वारा अधिक पेमेंट करने का और दूसरे द्वारा बिना पेमेंट खान- पान ले जाने का दिनभर चलता रहता है।

यानि, अपनी पहचान न कराते हुए और किसी के चेहरे को जाने बिना भी अज्ञात गरीबों, जरुरतमन्दों की मदद करना यह है नार्वे नागरिकों की परंपरा।

और बताया गया कि यह कल्चर अब यूरोप के अन्य कई देशों में फैल रही है। और हम अस्पतालों में एक केला, एक संतरा मरीजों को बांटेंगे तो सारे मिलकर अपनी पार्टी, अपने संगठन का ग्रुप फोटो खिंचाकर अखबार में छापेंगे, है ना ?

क्या भारत में भी इस प्रकार की खान- पान की "Suspension" जैसी प्रथा का प्रारंभ हो सकता है ?

अभी अभी तो मिली थी

अभी अभी तो मिली थी
मिलते ही तुम छोड़ चली
साथ ना दे पाऊंगी मैं
बोल मुझे तन्हा छोड़ चली।।

चाह संग जुड़ रहे थे जो
वो तुझसे मेरे सपने थे।
एक पल सा लगा मुझे।
तुम तो मेरे अपने थे।।

सच ही तुम कहती थी,
नेक इंसा नहीं जमाने में।
माफ करना गुस्ताखी मेरी,
अगर दिल टूटा अनजाने में।।

अभी अभी तो तुम मिली थी,
एक पल संग रह छोड़ चली।
कुछ तो सोची होती मेरे,
संजोए सपने जो तोड़ चली।।

संग बीते आज हर पल,
अहसास दिलाते कल होंगे।
मुस्कराना हर पल खुशी संग,
भले उस खुशी में हम ना होंगे।।

अभी अभी तो मिली थी मुझको,
मिलते ही तन्हा तुम छोड़ चली।
कमी संग बहुतेरे खूबियां मुझमें,
कर दरकिनार उन्हे तू छोड़ चली।।

अंकुर सिंह
चंदवक, जौनपुर उत्तरप्रदेश
मो. : 8367782654
व्हाट्सअप : 8792257267

आदर्श व्यापारी सिर्फ व्यापार नहीं, बल्कि व्यापार के अनुसार सही मार्केट चुनता है

मार्केट का भविष्य :

21वीं सदी में व्यापार की प्रक्रिया सूचना क्रांति की तरह तेजी से बदल रही है। व्यापारी नई तकनीकों का समावेश कर व्यापार को बढ़ाने का हर संभव प्रयास कर रहा है। पुरातनकाल से चली आ रही व्यापार पद्धति खुला बाजार (ओपन मार्केट) की जगह नई तकनीक वाले मार्केट दिन ब दिन प्रचलित होते जा रहे हैं। आधुनिक युग में खुला बाजार (ओपन मार्केट) की जगह ऑनलाइन मार्केटिंग और शेयर मार्केट व्यापारियों व निवेशकों की पहली पसंद बनता जा रहा है। हर आम आदमी आज खुले बाजार (ओपन मार्केट) की जगह ऑनलाइन मार्केटिंग को अधिक पसंद कर रहे हैं। फल स्वरूप खुले बाजार (ओपन मार्केट) की उपयोगिता कम होती जा रही है, वहीं बड़े व्यापारियों का ऑनलाइन मार्केटिंग अधिक सफल हो रहा है। 21वीं सदी मेंउत्पाद बेचने का नया क्रांतिकारी मार्केट, जिसे नेटवर्क मार्केटिंग के नाम से जाना जाता है कि उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

मार्केट का वर्गीकरण :

हर व्यापारी के पास व्यापार करने के अपने तरीके होते हैं, परंतु बदलते व्यापार परिवेश में हर व्यापारी को मार्केट का सही चुनाव कर व्यापार को नए तरीके से करना होगा। हर व्यापारी को मार्केट का सही चुनाव ही सफल बना सकता है। आधुनिक युग में व्यापार करने की प्रणालियों के अनुसार मार्केट को मुख्यतः चार भागों वर्गीकृत किया जा सकता है।

(1) खुला बाजार (2) ऑनलाइन मार्केट

(3) शेयर मार्केट (4) नेटवर्क मार्केट

खुला बाजार (ओपन मार्केट) :

बहुत सारे प्रतिष्ठानों का समूह और उत्पाद बिक्री की जगह को खुला बाजार के नाम से जाना जाता है। आपको व्यापार में मुनाफा उत्पाद बेचते वक्त नहीं, बल्कि उत्पाद को सही दाम में खरीदने से होता है।

खुले बाजार से जुड़े व्यापारियों के लिए महत्वपूर्ण गुण :

(1) उत्पाद बेचने की कला में महारत

(2) ग्राहक से मिलानुसार व्यवहार

(3) उत्पाद की कीमतों व उत्पाद के गुणों का पूर्ण ज्ञान

खुले बाजार (ओपन मार्केट) का उद्देश्य इस व्यापार में आपका मुख्य उद्देश्य बाजार में आपकी पहचान बनाना है। अन्य प्रतिष्ठान व संस्था या कंपनी से बेहतर उत्पाद, सेवा उत्पाद, मूल्य, उत्पाद की विशेषता आपको बाजार में नई पहचान देगी। अतः आपका व्यापार ग्राहक की परम संतुष्टि पर निर्भर करता है। आपकी सेवा में उत्पाद से ग्राहक की संतुष्टि अनिवार्य है।

खुले बाजार का भविष्य :

बढ़ते हुए सूचना तकनीकी के कारण खुले बाजार को बड़ा झटका लगा है। दिन प्रतिदिन खुले बाजार (ओपन मार्केट) में उत्पादों की बिक्री कम होती जा रही है। आज हर आम व्यक्ति मोबाइल की सहायता से सूचना तकनीकी से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है। फलस्वरुप ऑनलाइन मार्केटिंग आम आदमी की पहली पसंद बनता जा रहा है। क्योंकि इसमें समय की बचत और उत्पादों की कीमत खुले बाजार से तुलनात्मक रूप से कम है। भविष्य दृष्टि से खुले बाजार की उपयोगिता कम होती जा रही है। हर खुले बाजार का व्यापारी इसे स्थायी व प्रभावी बनाने में बड़ा से बड़ा जोखिम ले रहा है।

भविष्य दृष्टि के तौर पर खुला बाजार जोखिमों से भरा हुआ है

प्रभावी व्यापार का सुझाव :

(1) व्यापार को डिजिटल तकनीकी से जोड़ें।

(2) डिजिटल विज्ञापनों का प्रयोग करें।

(3) सेवाओं को बाजार से घर तक पहुंचाएं।

उदाहरण : अगर आप कपड़ा उद्योग में है, तो आप ध्यान में रखें कि आपको मुनाफा कपड़े बेचते वक्त नहीं, बल्कि कपड़े खरीदते वक्त होगा। इसलिए कंपनी से कपड़े खरीदते समय सही दाम पर उचित समय अनुसार उचित कपड़ों का चुनाव करना आवश्यक है। कपड़ों की बिक्री बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया और डिजिटल ऐप का इस्तेमाल करना, ताकि बिक्री को और बढ़ाई जा सके।

ऑनलाइन मार्केट :

सूचना तकनीक के यंत्रों द्वारा उत्पाद को प्रदर्शित कर विपणन के योग्य बनाना। आदर्श व्यापारी उत्पादों को महंगा बेचकर नहीं, बल्कि उन्हें सस्ता खरीद कर मुनाफा बनाता है।

ऑनलाइन से जुड़े व्यापारियों के लिए महत्वपूर्ण गुण :

(1) सूचना तंत्र में महारत (2) उत्पाद के प्रदर्शन का आदर्श मॉडल

(3) सोशल मीडिया से विज्ञापन (4) उचित समय पर होम डिलीवरी

ऑनलाइन मार्केट का उद्देश्य :

ऑनलाइन मार्केट का प्रमुख उद्देश्य उत्पादों को कम दाम में कम समय में ग्राहक के घर तक पहुंचाना। बदलते आधुनिक परिवेश में हर आदमी व्यस्तता की ओर बढ़ रहा है। अतः उनका समय बचा कर उत्पाद की आदर्श सेवा पहुंचाना ऑनलाइन मार्केट से संभव हो पा रहा है। ऑनलाइन मार्केट में ग्राहक की संतुष्टि प्रदर्शित उत्पाद व प्राप्त उत्पाद में समानता है। अतः प्रदर्शित उत्पाद व प्राप्त उत्पाद सम्मान हो।

ऑनलाइन मार्केट का भविष्य :

बढ़ते हुए आधुनिक सूचना तंत्र ने ऑनलाइन मार्केट की उपयोगिता बढ़ा दी है। हर आम व्यक्ति ऑनलाइन मार्केट से उत्पादों को खरीद रहा है। ऑनलाइन मार्केट में समय की बचत के साथ उत्पादों को घर तक प्राप्त करने की सुविधा आम व्यक्ति को आनंदित महसूस करा रही है। इसी कारण ऑनलाइन मार्केट की कंपनियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ ही रही है। हर व्यापारी आज ऑनलाइन मार्केटिंग से व्यापार करना पसंद करना है। भविष्य दृष्टि के तौर पर ऑनलाइन मार्केट का भविष्य उज्जवल माना जा सकता है।

प्रभावी व्यापार के सुझाव :

(1) उत्पाद का प्रदर्शन और उत्पाद प्राप्ति में समानता हो

(2) अपडेट सूचना तकनीक का इस्तेमाल करें।

(3) होम डिलीवरी समयानुसार हो

(4) उत्पाद की संख्या व विशेषता और परिमाप का सरल प्रदर्शन हो

उदाहरण : प्रमुख ऑनलाइन कंपनियां सस्ते दामों पर देश व विदेश से उत्पादों की कंपनियों का सरल तरीके से प्रदर्शन करते हैं और उत्पादों को ग्राहक के घर तक पहुंचाते है। कई ऑनलाइन कंपनियां विशेष उत्पादों में विशेष समय पर छूट देकर भारी मुनाफा अर्जित करती है। उत्पाद का उत्पादन करने वाली कंपनियां खुले बाजार की बजाय ऑनलाइन मार्केट कंपनियों को सस्ते दामों पर उत्पाद उपलब्ध कराती है। इसी वजह से ऑनलाइन मार्केट में उत्पाद खुले बाजार की बजाय सस्ते उपलब्ध होते हैं।

शेयर मार्केट :

इस बाजार में बड़ी कंपनियों के शेयर खरीदे व बेचे जा सकते हैं। सबसे बड़ा जोखिम शेयर खरीदने व बेचने में नहीं, बल्कि सही शेयर को चुनने में है।

शेयर मार्केट के निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण गुण :

(1) जोखिम लेने के प्रभावी क्षमता

(2) निरंतरता से शेयर कंपनियों का अध्ययन

(3) देश विदेश की बड़ी सूचना की पूर्ण जानकारी

(4) कंपनियों से जुड़ी अंदरूनी जानकारी

शेयर मार्केट का उद्देश्य :

देश को आत्मनिर्भर से परस्पर निर्भर बनाने की क्षमता विकसित करना। शेयर मार्केट से आम व्यक्ति को जागरूक करना।

शेयर मार्केट का भविष्य :

भारत में शेयर मार्केट का रुझान दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। सरकार द्वारा किए जाने वाले निजीकरण की वजह से दिन प्रतिदिन शेयर मार्केट कंपनियों की संख्या बढ़ती जा रही है। दूसरी तरफ सूचना तकनीकी की मदद से हर व्यक्ति शेयर मार्केट में निवेश कर पा रहा है। बढ़ते हुए निवेशकों की संख्या से अनुमान लगाया जा सकता है कि शेयर मार्केट देश की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भविष्य दृष्टि के तौर पर शेयर मार्केट आने वाले समय में उछाल पर रहेगा। हाल ही में आए क्रिप्टो करेंसी मार्केट में भी लोग बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं, जो शेयर मार्केट के समतुल्य हैं।

प्रभावी निवेश के तरीके :

शेयर मार्केट सेमिनार में भाग लेकर शेयर मार्केट कंपनियों पर निरंतर अध्ययन करें।

उदाहरण : नई कंपनियों के आईपीओ पर निवेश करें। शेयर मार्केट की जानकारियों के लिए सूचना तंत्र का उपयोग कर सही निवेश को चुने।

नेटवर्क मार्केट :

नेटवर्क मार्केट बिना विज्ञापन के उत्पाद के विपणन का वह तरीका, जिसमें नेटवर्क की एक टीम द्वारा कोई भी उत्पाद बेचा जाता है। नेटवर्क मार्केट में सफलता धन के निवेश से नहीं, बल्कि समय के निवेश से मिलती है।

नेटवर्क मार्केट में सफल बनने के लिए महत्वपूर्ण गुण :

(1) लीडरशिप की जीवन शैली (2) भाषा शैली में माहिर

(3) एक अच्छे ट्रेनर के गुण

उद्देश्य : नेटवर्क टीम द्वारा नेटवर्क मार्केटिंग कंपनी के उत्पादों का उपभोग कर नेटवर्क को बड़ा करना।

नेटवर्क मार्केटिंग का भविष्य :

नेटवर्क मार्केटिंग 21वीं सदी की नई व्यापार प्रणाली है। उत्पाद को बेचने का नया क्रांतिकारी तरीका नेटवर्क मार्केटिंग की पहचान है। नेटवर्क मार्केटिंग उन लोगों के लिए बेहतर है, जो भाषाशैली और सिखाने में निपुण है। इस मार्केट में सफल होने के लिए सीखने और सिखाने दोनों में निपुणता आवश्यक है। नेटवर्क मार्केटिंग की सबसे बड़ी चुनौती उत्पाद को बिना विज्ञापन के लोगों तक पहुंचाना और उन्हें अपनी टीम का हिस्सा बनाना, परंतु यही चुनौती आपको लीडर बनाती है। इसके ट्रेनिंग प्रोग्राम आपके आर्थिक परिवेश को बदल देते हैं। भविष्य दृष्टि के तौर पर 21वीं सदी का सबसे प्रभावी मार्केट है।

नेटवर्क लीडर की पहचान :

(1) सही कंपनी का चुनाव करें।

(2) अपनी सही टीम प्रभावी टीम लीडर का चुनाव करें।

उदाहरण : सूचना तंत्र से सही नेटवर्क मार्केटिंग कंपनी का पता करें। उस कंपनी के सेमिनार में हिस्सा ले। उन्नत ट्रेनिंग के लिए खुद को तैयार करें। याद रखें नेटवर्क मार्केटिंग में सफल होने के लिए सर्वोत्तम गुण लीडरशिप है।

प्रिंस कुमार जोशी
बिजनोल, नाथद्वारा
मो. 8209537244

आजाद

अवनी अपने जीवन के छह सावन पार कर चुकी थी। सातवें सावन में बादल से बरसती बूंदों में छत पर कोयल सी मधुर स्वर लहरी सुनाती हुई मयुर की तरह नृत्य कर रही थी, तभी एक काली कंठी वाला मिट्ठु का बच्चा कहीं से उड़ता हुआ आया। शायद अभी- अभी उड़ना सीखा था और छत पर गिर गया। बारिश से पंख भीग जाने से अधिक उड़ान नहीं भर सका। अवनी ने पापा को आवाज लगाई, पापा- पापा देखो तो मिट्ठु आया हैं। पापा ने कहां हैं? पापा, यह क्या हैं, मिट्ठु की ओर इशारा करते हुए कहा। पापा उसको अंदर बरामदे में लाए और मुलायम गुलाब के फूल के समान मखमली वस्त्र से उसके कोमल तन के अंग- अंग को पौंछने लगे। फिर उसके सामने एक कटोरी में पानी भर कर रखा और टमाटर मिर्च रखीं। वह लाल- लाल चोंच से कुतर- कुतर कर खाने लगा। एक हाथ से पकड़ कर थोड़ा खाता और थोड़ा धरा पर गिरा देता।

अवनी ने कहा- पापा हम इसे पालेंगे। पापा ने इनकार करते हुए कहा- नहीं, इसे पाल नहीं सकते। इसके साथी के बिना यह नहीं रह सकेगा, लेकिन अवनी के बार-बार जिद् करने और उसके भाई भूमित के कहने पर उसे पालने का निश्चय किया गया। उसका नाम रखा गया श्यामकंठी। उसके लिए पिंजरा लाया गया, उसे उसमें रखा। रोज सुबह- सुबह अवनी की बड़ी बहन धरा उस पिंजरे को धोती। उसके खाने के बर्तन साफ करती। श्यामकंठी को नहलाती और खाने के लिए कुछ ना कुछ रखती। धीरे - धीरे समय बीतता गया। श्यामकंठी अवनी, धरा, मूमित और घर के सदस्यों से घुलमिल गया था। लेकिन जब जब भी सावन आता, नभ में काली- काली घटाएं छाती, रिमझिम- रिमझिम नीर बरसता, उसको वह दिन याद आ जाता, जिस दिन वह अपने साथियों से बिछड़ा था। वह जोर- जोर से ट्यों ट्यों का स्वर अलापने लग जाता और गुमसुम हो जाता। चुपचाप रहता, उस दिन उसके शरीर में कोई हलचल या हरकत दिखाई नहीं देती। चार- पांच वर्ष बीत चुके, अवनी ग्यारह- बारह साल की हो चुकी थी। उसी वर्ष ना जाने कहां से कोरोना नाम की वैश्विक महामारी आई। लाखों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। सारी मानव जाति पूरे विश्व में लॉकडाउन का पालन कर रही थी। अवनी और धरा भी इससे अछूती नहीं थीं। वह भी लॉकडाउन में फंसी हुई थी। ना विद्यालय जाना, ना बाहर घुमने- फिरने जाना, शादी समारोह सभी बंद, खेलना- कूदना बंद।

यहां तक कि घर की दहलीज के बाहर कदम रखना भी जान को जोखिम में डालने जैसा था। ऐसे में घर में कैद रहकर अवनी और धरा बुरी तरह परेशान हो गई। दिनभर टीवी, मोबाइल में उलझी रहती या केरम, लुड्डो खेलती। कभी- कभी श्यामकंठी के साथ मन बहलाती। एक दिन श्यामकंठी के साथ सभी बरामदे में बैठ कर हंसी मजाक कर रहें थे। संध्याकाल था कि अचानक गगन में बादल छा गए। बूंदें बरसने लगी, श्यामकंठी तेज- तेज ट्यों ट्यों का स्वर अलापने लगा। तभी अवनी को वहीं दिन याद हो आया, जिस दिन ऐसी ही बारिश में श्यामकंठी उड़ कर आया था। यह सोच कर वह उदास, दु:खी और मायूस हो गई, तभी पापा ने कहा- क्या हुआ अवनी ? इतनी गुमसुम क्यों हो? अवनी ने कहा- पापा मुझे माफ करना। उस दिन आपने मुझे श्यामकंठी को पालने से मना किया था, पर मैं आपकी बात समझ नहीं पाई थी, लेकिन जब कोरोना की वजह से आज हमें लॉकडाउन में रहना पड़ रहा हैं, तो मुझे ऐसा लग रहा हैं। जैसे हमें किसी ने कैद कर दिया हैं, ठीक उसी श्यामकंठी की तरह। आज मैं उसकी पीड़ा, दर्द महसूस कर रहीं हूं। पापा हम अब उसे आजाद नहीं कर सकते हैं, क्या? नहीं, अब वह अपने झुंड से नहीं मिल सकता, उसे कहां ढूंढेगा। दूसरे झुंड वाले इसे मार देंगे, तभी कुछ मिट्ठु उड़ते- उड़ते आएं और श्यामकंठी के पिंजरे के पास जाकर उससे खेलने लगे। वह भी उनसे खेलने लगा, जब मिट्ठु आपस में अपनापन महसूस करने लगे, तो अवनी ने पिंजरा खोल दिया। श्यामकंठी बाहर आ गया और अन्य मिट्ठुओं के साथ उड़ चला नभ की ओर। गगन को चुमने, मस्ती में झुमने, अब वह आजाद हो गया। जब तक श्यामकंठी व्योम में लुप्त नहीं हुआ, अवनी टकटकी लगाएं निहारती रहीं। शून्य को नयनों में मोती सी बूंदें लिए, पापा ने स्नेह से अवनी के सिर पर हाथ फेरते हुए उसके माथे को चुम लिया।

मनीष नंदवाना
चित्रकार, राजसमन्द
मो. 99510-66610

मां – जिजीविषा

मुझे बचना है अनजान शत्रु से,
बचाना है अपने प्यारे बच्चे को,
हर मुमकिन कोशिश करूंगी
खुद का अस्तित्व बचाने को,
ना डरूंगी ना घबराऊगी,
ना अंत तक हिम्मत हारूगी,
अगर जो मैं हार गई तो
बच्चा मेरा हार जाएगा
एक मां को यह मंजूर नहीं
मुझे हर हाल में लड़ना है
दुनिया को दिखलाना है
जब एक मां बच्चे के खातिर
यम से लड़ सकती हैं
तो करोना किस खेत की मूली है
गर्भ के खातिर नहीं कर सकती
घरेलू नुस्खे तो क्या हुआ?
नग्न आंखों से ना दिखने वाले
इतने छोटे शत्रु को
मैं खुद पर हावी कैसे होने दे सकती हूं
अपनी आत्मशक्ति को मैं
क्षीण क्षीण होते कैसे देख सकती हूं
योग करूंगी, भोग करूंगी
मन में मैंने ठान लिया हैं
विचलित नहीं होना है
आखिर मुझे ही लड़ना हैं
मुझे बचना है अनजान शत्रु से
बचाना है अपने प्यारे बच्चे को
बचाना है अपने अस्तित्व को
बचाना है अपने ममत्व को
मुझे बचना है मुझे बचाना है
अपने प्यारे बच्चे को

शक्ति बाला
पाली, राजस्थान

बहुत गड़बड़झाला है

जब से यह कोरोना इस देश में आया है
तब से हम सबको इसने बहुत रुलाया है
इसकी वजह से लाखों गरीबों के
मुंह का छिन गया निवाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है

लाखों लोगों का रोजगार छिन गया
कई व्यापारियों का व्यापार बंद हो गया
कोरोना ने इस आफतकाल में भी
अमीरों की तिजोरियों को भर डाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है

डॉक्टर, नर्सिंगकर्मी भी कोरोना से मर रहे हैं
राजनेता इसमें भी जाति का खेल खेल रहे हैं
हिन्दू डॉक्टर की मौत पर दो आंसू भी ना आएं पर
मुस्लिम डॉक्टर की मौत पर एक करोड़ दे डाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है

राजनेता भी कैसे पत्थर दिल हो गए हैं
लाशों के ढेर पर घोषणाओं में लग गए हैं
मरीजों को दवा, बेड, ऑक्सीजन नहीं दे पा रहे हैं
पर उन्हें कफन मुफ्त में देने का वादा कर डाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है

क्या देश के अन्य धंधे चौपट नहीं हुए हैं
क्या देश में लाखों अन्य लोगों के हाथ
बतलाओ जरा रोजगार से वंचित नहीं हुए हैं
फिर केवल देश में कश्मीर के शिकारे वालों को
हमारे टैक्स का रुपया खेरात में क्यों दे डाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है
सचमुच बहुत गड़बड़झाला है

पुरुषोतम शाकद्वीपी
उदयपुर, राजस्थान
मो. 9649092060

संयुक्त परिवार

दादी भी हो, नानी भी हो
परियों की वो कहानी भी हो
ताई, चाची, बुआ, बहना
हंसी ठिठोली, वाह क्या कहना

एक रसोई, एक ही आंगन
साथ सभी के झूमे ये मन
साथ खेलना, साथ में खाना
दादा के संग, खेत पे जाना

पैसे कम पर, प्यार बहुत था
घर छोटा, परिवार बहुत था
ताऊ, चाचा, पापा थे सादा
घर के मुखिया थे मेरे दादा

याद है मुझको, गर्मी सर्दी सावन
सबके साथ गुजारा, मैंने बचपन
सयुंक्त परिवार, अब गुम सा गया है
हर घर में एकल परिवार हो गया है

बच्चे अब कहानी, फोन पर सुनते हैं
भाई भाई को नहीं, जायदाद चुनते हैं
देवरानी- जेठानी में झगड़े बहुत हैं
किसे कम, किसे ज्यादा मिला लफड़े बहुत हैं

बूढ़े मां बाप को भी बेटे अब बांट लेते हैं
बारी बारी रखेंगे, महीने छांट लेते हैं
मां बाप की रोटी भी बेटों पर भारी हो जाती है
अकेले जीना उनकी लाचारी हो जाती है

दिलों दिमाग पर बस प्रोपर्टी छा गई है
भाई बहन का रिश्ता ये आधी जायदाद खा गई
पहले से रिश्ते, पहला सा प्यार नहीं है
रिश्ते तो आज भी हैं,
बस सयुंक्त परिवार नहीं हैं

क्यों न सब मिलकर,
एक नई शुरुआत करते हैं
जायदाद छोड़कर, रिश्तों को चुनते हैं

पूनम चौधरी
भरतपुर,
मो. 9783105224

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

व्यंग्य

गर्व से कहो हम सब हैं झूठे और बेशर्म

इंसान का पूरा जीवन ऐसा विचित्र अभिनय होकर रह गया है, जिसमें वह चाहते हुए भी सच नहीं बोल सकता या कि सच बोलने का माद्दा ही नहीं रहा। उसे वही सब करना पड़ता है, जो अब से पहले तक होता रहा है, पहले वाले लोग करते आ रहे हैं। इन्हें हम सीधी और सरल भाषा में ओढ़ी हुई मजबूरी कह सकते हैं या फिर परम्परागत भेड़ चाल का अनुगमन। मरने के बाद और रिटायरमेंट के समय नालायकों की भी केवल झूठी तारीफ ही तारीफ करने की परंपरा के कारण ही इनके जीवन का श्वेत श्याम सत्य समाज के सामने नहीं आ पाता। फिर समाज कैसे सुधरेगा- संवरेगा। सच को छिपाए रखना पाप भी है और सामाजिक अपराध भी। खुलकर सच कहें ताकि आने वाली पीढ़ियां सीख और सबक ले सकें।

हालात ये हैं कि जो लोग पूरी नौकरी के दौरान महा निकम्मे, भ्रष्ट, रिश्वतखोर और काम अटकाऊ, खाऊ और संग्राहक ही बने रहकर संस्थान, समाज और देश पर भार बने रहते हैं। नेताओं की चमचागिरी और अफसरों की चापलुसी में रमे रहकर मजे लेते रहते हैं। ड्यूटी टाईम में चाय- पकौड़ों और नाश्ते की दुकान पर मिलते हैं, दिन भर टन्न रहते हैं।

भ्रष्टाचार की कमाई में डूबे रहते हैं, व्यभिचार में डूबे रहते हैं, सरकारी सामान घर में वापरते हैं और फिर लौटाते तक नहीं, एक्स्ट्रा इन्कम के लिए मरते हैं। फुटपाथी भिखारियों की तरह पार्टी, दारू, मीट और दूसरे सब कुछ भोग- विलासी संसाधन और मानव संसाधन मांगते हैं। किसी का भला करने की बजाय दु:खी करते हैं। ऐसे लोगों के रिटायरमेंट पर इनकी प्रशस्ति की ओलावृष्टि के साथ मिथ्या गान होता है। फूलमालाओं से लाद दिया जाता है, इतना अधिक महिमागान होता है कि बेचारे खुद शरमा जाते हैं और फिर इतना महान बताया जाता है कि जैसे इनके रिटायर हो जाने के बाद तो संस्था चलानी ही मुश्किल पड़ जाएगी। समाज और देश का विकास अवरूद्ध हो जाएगा।

सबसे अधिक हैरत की बात यह है कि हर मामले में कमीशन और एकतरफा आवक ही आवक में रमे रहने वालों को ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और समर्पित बताने वालों की कोई कमी नहीं रहती। आखिर इतना सारा झूठ बोलकर हम कहां जाएंगे। न हमें अपनी आत्मा का भय है, न ईश्वर का खटका। कइयों की तो यह भी मजबूरी है कि आज इनके बारे में अच्छा ही अच्छा नहीं कहेंगे तो कल हमारा रिटायरमेंट आने पर लोग हमारी कलई उतार देंगे। इसलिए यह अघोषित समझौते भरा एजेण्डा है कि हम सभी एक- दूसरे के भ्रष्टाचार, कामचोरी और आलस्य पर परदा डालें रहें, ताकि किसी को किसी और से कोई खतरा न रहे। चोर- चोर मौसेरे भाई, डकैत-डकैत सगे भाई जैसा माहौल नज़र आता है।

मिथ्या महिमा गान से बेचारे उन लोगों की भी सेवाओं का कोई मूल्यांकन नहीं होता, जो वास्तव में पूरी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और समर्पित भावों से मेहनत करते हुए वाकई अपने पूरे सेवाकाल को गरिमामय बनाने में जिन्दगी के बहुमूल्य क्षण होम देते हैं। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो रिटायरमेंट की पार्टियां झूठी तारीफों के पुल बांधने और झूठ ही झूठ अभिव्यक्ति के दौर से ऐसी भरी रहती हैं कि बोलने वाला भी अच्छी तरह जानता है कि वह झूठ बोलकर अभिनय कर रहा है और सुनने वाला भी समझता है कि इन बातों का सच्चाई या बुनियाद से कोई संबंध नहीं है। यानि चौतरफा झूठ ही झूठ और वह भी दूसरों को खुश करने के लिए अपनी आत्मा के साथ दगा। राम- राम।

क्यों नहीं रिटायरमेंट की पार्टी के दौरान ही रिटायर होने वालों के असली चरित्र पर प्रकाश डालें, ताकि नई पीढ़ी में इनके बारे में जानकर अनुकरण करने की उदारता कर सके। अच्छाइयों को भी बताएं और कमियों- बुराइयों को भी। इनकी करतूतों और कारगुजारियों के बारे में सभी लोग साफ-साफ बोलें और बताएं कि इन्होंने किस तरह हरामखोरी और भ्रष्टाचार किया है और पूरी नौकरी लोगों को तंग करने के सिवा कुछ नहीं किया है। यों तो हम सब अपने आपको गांधीजी के भक्त मानते हैं, लेकिन असल में हमारा मूल्यांकन किया जाए तो सामने आएगा कि हम गांधी के नहीं, गांधी छाप के भक्त हैं और इस भक्ति में डूबे रहकर हम कुछ भी करने को स्वतंत्र ही नहीं स्वच्छन्द हैं और पूरी स्वेच्छाचारिता के साथ सारी मर्यादाएं लज्जा और मूल्य त्यागने में गर्व और गौरव का अनुभव करते रहे हैं।

इसी प्रकार यह भी गलत परंपरा है कि मरने के बाद व्यक्ति की अच्छाई ही कही जानी चाहिए। कहां लिखा है कि झूठ बोलना चाहिए। सच का बखान नहीं करना चाहिए। बड़े- बड़े भ्रष्ट, उठाईगिरों, लूटरों और शोषकों, गुंडों और असामाजिक तत्वों की मौत के बाद भी इनका महिमागान होता रहता है और तो और इनकी पगड़ी रस्म के दिन बटरिंग प्रजाति के कुछ चुनिन्दा लोग इस तरह शोक संदेश तैयार कर लाते हैं और पढ़ते हैं, जैसे कि महान सेवाभावी, परोपकारी और लोकप्रिय रही मृतात्मा के लिए अभिनंदन ग्रंथ के पन्ने पढ़ते जा रहे हों।

हद है, कोई सच बोलना ही नहीं चाहता। सारे असत्य और लफ्फाजी भरा महिमा गान ही करते रहते हैं। इतना अधिक प्रशस्तिगान कि प्रेत योनि में पड़ी जीवात्मा भी यह सब सुन कर रोने लगती होगी कि इंसान इतना अधिक झूठ क्यों बोलता रहता है। और तो और श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में से अधिकतर इनके चले जाने को अपूरणीय क्षति बताते हैं जैसे कि इनके जाने के बाद देश- दुनिया का पहिया थम जाएगा, कोई भूचाल आ जाएगा। किसी भी इंसान की मौत को अपूरणीय क्षति बताना प्रकृति और परमेश्वर दोनों का अपमान है जिनके जिम्मे सृष्टि निर्माण है।

सदियों से लोग मरते रहे हैं और हम इनके परिजनों और बाद वालों को खुश करने के लिए हमेशा इन दो शब्दों का प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल करते रहे हैं, अपूरणीय क्षति। यह शब्द आंखों के सामने आने और कानों में पड़ते समय लगता है कि रत्नगर्भा वसुन्धरा धरती बीज खा गई और अब ऐसे लोगों का प्रजनन पूरी तरह अवरूद्ध ही हो जाएगा। यही सब चलता रहा है, इसलिए समाज और क्षेत्र में अच्छे- बुरों में कोई फर्क नहीं। हालांकि यह भी सच है कि जिदंगीभर हराम की कमाई और झूठन का खान- पान करने वाले लोग कभी सच नहीं बोल सकते। निर्भीकता के साथ सच वही बोल सकता है जिसका हाड़- मांस खुद के परिश्रम से अर्जित कमाई से बना हो, जीवन में सर्वांग शुचिता हो और स्वाभिमानी जीवन जीने का आदी हो।

अच्छों को अच्छा कहने की उदारता रखें और बुरे को बुरा कहने का साहस। तभी समाज को सही दिशा और शुचितापूर्ण दशा प्राप्त हो सकती है। समाज, क्षेत्र और देश की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण हमारा दोहरा चरित्र और तटस्थ बने रहकर हमेशा सकारात्मक छवि की चादर ओढ़े रहना ही है। यह याद रखें कि औरों को खुश रखने और करने के लिए धरती पर जितना अधिक झूठ बोला जाएगाए उतनी ही अधिक नारकीय यंत्रणाओं को भोगना पड़ेगा। और दुबारा इंसान बनने का मौका भी हाथ से चला जाएगा।

डॉ. दीपक आचार्य
व्यंग्यकार
बांसवाड़ा

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

बिटकॉइन
भविष्य की संभावित विश्वव्यापी मुद्रा

आज के समय में सूचना प्रौद्योगिकी ने हर क्षेत्र में अपना दखल प्रदर्शित किया है। आज जीवन के किसी भी क्षेत्र में अगर हम तरक्की की बात करते हैं या विकास की बात करते हैं, तो सूचना प्रौद्योगिकी के बिना वह क्षेत्र अधूरा ही दिखाई देता है। चाहे वह संचार की बात हो, चाहे उद्योग की बात हो, चाहे मार्केटिंग की बात हो या चाहे फाइनेंशियल या अर्थ तंत्र की बात हो, सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी जगह अपने कदम तेजी से गड़ाएं हैं। इसी क्षेत्र में वर्चुअल करेंसी भी एक उभरता हुआ सा नाम है। हालांकि आज लगभग सभी बैंकों ने अपने वर्चुअल करेंसी सिस्टम को लागू किया है। जिसके अन्तर्गत ऑनलाइन ट्रांजैक्शन और बैंक वॉलेट जैसी सुविधाएं देकर वर्चुअल करेंसी को एक प्रकार से मार्केट के अंदर प्रस्तुत कर ही दिया है। इसी के अंतर्गत एक विशेष नाम जो सामने आ रहा है, वह है बिटकॉइन।

सामान्यतः हमें यह बड़ा अजीब सा नाम लगता है। बिटकॉइन क्या है, बिटकॉइन किस तरीके से मार्केट में चलता है। टेक्नीकल विंडो के इस अंक में आपको बिटकॉइन से साक्षात्कार करवाते हैं। साथियों बिटकॉइन भी एक वर्चुअल करेंसी है। जैसे कि रुपया, पाउंड, डॉलर इत्यादि होती हैं। बिटकॉइन को हम डिजिटल करेंसी भी कहते हैं। बिटकॉइन को क्रिप्टोकरेंसी भी कहा जाता है। क्योंकि यह क्रिप्टोग्राफी के आधार पर कार्य करती है। यह करेंसी बैंक द्वारा प्रचलित करेंसी या मुद्रा से बिल्कुल अलग है। क्योंकि हम बिटकॉइन को केवल ऑनलाइन वॉलेट में ही स्टोर करके रख सकते हैं। इसे भौतिक रूप से अपने हाथों से छू नहीं सकते और ना ही हम अपनी आंखों से इसे देख सकते हैं।

बिटकॉइन का आविष्कार या इस पद्धति का प्रादुर्भाव वर्ष 2009 में हुआ था। इसके आविष्कारक का नाम सतोशी नाकामोतो है। उन्हीं के नाम से बिटकॉइन की सबसे छोटी इकाई का नाम रखा गया है, जिसे सतोशी कहते हैं। इसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है। हां यह कि यहां पर कहना जरूरी है कि अप्रत्याशित रूप से बिटकॉइन की लोकप्रियता अभी तक सामने नहीं आई है।

बिटकॉइन एक डिसेंट्रलाइज करेंसी या मुद्रा है, जिसका मतलब यह है कि इसे नियंत्रित करने के क्रम में कोई भी बैंक, कोई भी ऑथोरिटी, सरकार या किसी भी अधिकृत एजेंसी नहीं आती है। शायद इसी कारण मार्केट में इसका इस्तेमाल विकासशील देशों में तेजी से नहीं बढ़ सका है। बिटकॉइन का उपयोग कोई भी कर सकता है। जिस प्रकार हम इंटरनेट का उपयोग करते हैं। उसी प्रकार हम बिटकॉइन को भी इस्तेमाल कर सकते हैं और इसका कोई एक निजी व्यक्ति मालिक नहीं है या यह किसी निजी तंत्र के द्वारा संचालित नहीं किया जाता है। बिटकॉइन का उपयोग हम उसी तरीके से कर सकते हैं, जिस तरीके से अन्य बैंकों की करेंसी का उपयोग ऑनलाइन पेमेंट करने के लिए किया जा सकता है या ऑनलाइन ट्रांजैक्शन के लिए हम बिटकॉइन का इस्तेमाल कर सकते हैं।

बिटकॉइन एक पियर- टू- पियर ट्रांसफर सिद्धांत पर कार्य करता है। जिसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ सीधे ही अपनी मुद्रा का स्थानांतरण कर सकता है। इस हेतु हमें किसी बैंक, क्रेडिट कार्ड, कंपनी या किसी अन्य माध्यम का सहारा नहीं लेना होता है। अगर ट्रांजैक्शन के नजरिए से देखा जाए तो बिटकॉइन सबसे तेजी से और कुशलता से ट्रांजैक्शन किए जाने वाली मुद्रा है। जो कि विश्वभर में तेजी से उपयोग में लाई जा रही है। बिटकॉइन के द्वारा किए गए ट्रांजैक्शन एक पब्लिक खाते में रिकॉर्ड होकर रहता है, जिससे बिटकॉइन ब्लॉकचेन कहते हैं। बिटकॉइन से किया गया ट्रांजैक्शन सामान्य बैंकों की तरह किसी प्रोसेस या किसी पेमेंट प्रोसेस को फॉलो करके नहीं होता है। यहां पर बिटकॉइन के साथ किए गए सभी ट्रांजैक्शन पब्लिक खाते में स्टोर रहते हैं और वही ब्लॉक चेन इसका प्रमाण होता है कि ट्रांजैक्शन हुआ है या नहीं। बिटकॉइन वॉलेट एक प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक स्टोरेज है, जिसमें हम बिटकॉइन को स्टोर करके रखते हैं। इसके रखने के लिए बिटकॉइन वॉलेट की जरूरत होती है। बिटकॉइन वॉलेट बहुत से प्रकार के होते हैं। जैसे- डेस्कटॉप वॉलेट, मोबाइल वॉलेट, ऑनलाइन वॉलेट, वेबपेज

वॉलेट, हार्डवेयर वॉलेट इत्यादि इनमें से एक वॉलेट को इस्तेमाल करके हम इसमें अपना अकाउंट बनाते हैं और उस अकाउंट के माध्यम से हम अपने ट्रांजैक्शन को करते हैं। बिटकॉइन को हम विभिन्न तरीकों से कमा सकते है। यहां पर हम तीन प्रमुख तरीकों की जानकारी आपके साथ साझा कर रहे हैं।

- अगर आपके पास पैसा है, तो आप एक बिटकॉइन सीधे डॉलर 999 देकर खरीद सकते हैं। ऐसा भी नहीं है, अगर आपको एक बिटकॉइन खरीदना है तो आपको डॉलर 999 देने होंगे। आप चाहो तो बिटकॉइन की छोटी यूनिट सतोशी सीधे ही खरीद सकते हैं। 01 बिटकॉइन के अंदर 10 करोड़ सतोशी होते हैं।
- अगर आप ऑनलाइन किसी को कोई सामान बेच रहे हो और उस खरीददार के पास अगर बिटकॉइन मौजूद है, तो उससे आप पैसे के बदले में बिटकॉइन ले सकते हैं। ऐसे में आप उन्हें वह सम्मान भी बेच पाएंगे और आपको बिटकॉइन भी मिल जाएगा। यह बिटकॉइन आपके बिटकॉइन वॉलेट में स्टोर होकर रहेगा या जिसे आप बिटकॉइन वॉलेट में स्टोर कर सकते हैं।
- इस तरीके को बिटकॉइन माइनिंग कहते है। इसके लिए हमें हाई स्पीड प्रोसेसर वाले कम्प्यूटर की आवश्यकता होती है। हम बिटकॉइन का इस्तेमाल सिर्फ ऑनलाइन पेमेंट करने के लिए करते हैं और जब कोई बिटकॉइन से पेमेंट करता है तो उस ट्रांजैक्शन को वेरीफाई किया जाता है। जो इन्हें वेरीफाई करते हैं हम उन्हें माइनर कहते हैं और उनके पास हाई परफॉर्मेंस कम्प्यूटर और सीपीयू होता है और वह इस जरिए ट्रांजैक्शन को वेरीफाई करते हैं, वो ये वेरीफाई करते हैं कि ट्रांजैक्शन सही है या नहीं या उसमें किसी तरह की हेराफेरी तो नहीं की गई है। इस वेरिफिकेशन के बदले उन्हें कुछ बिटकॉइन्स मेहनताने के तौर पर मिलता है और इस तरीके से बिटकॉइन मार्केट में आते हैं। यह कार्य कोई भी कर सकता है, बस इसके लिए हाई स्पीड प्रोसेसर वाले कम्प्यूटर की जरूरत पड़ती है, जिसे खरीदना हर किसी के बजट में नहीं होता है।

जिस तरह से हर एक बैंक और राष्ट्र अपनी गोल्ड वैल्यू से ज्यादा सीमा के नोट नहीं छाप सकते हैं, ठीक उसी प्रकार बिटकॉइन के साथ भी कुछ सीमाएं हैं कि 21 मिलियन से ज्यादा बिटकॉइन मार्केट में नहीं आ सकते हैं। यानी कि बिटकॉइन की सीमा बस 21 मिलियन है। उससे ज्यादा के बिटकॉइन कभी भी नहीं पाए जाएंगे। वर्तमान स्थिति की बात करें, तो इस समय में मार्केट में करीबन 13 मिलियन बिटकॉइन आ चुके हैं और नए बिटकॉइन अब माइनिंग के जरिए आने की संभावना सबसे ज्यादा है।

बिटकॉइन से ट्रांजैक्शन करने पर या बिटकॉइन को डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड से ट्रांजैक्शन करने पर बहुत ही कम फीस पर ट्रांजैक्शन किया जा सकता है और पूरी दुनिया में कहीं भी बिटकॉइन को बिना किसी दुविधा के भेजा जा सकता है तथा बिटकॉइन का अकाउंट कभी भी ब्लॉक नहीं होता है। जिस प्रकार सामान्य बैंकों का अकाउंट या डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड को ब्लॉक कर दिया जाता है। अभी तक बिटकॉइन के ट्रांजैक्शन प्रक्रिया में किसी भी ऑथोरिटी या सरकार का नियंत्रण नहीं है। इसलिए कभी- कभी इसे गलत काम करने के लिए भी प्रयोग में लिया जाता है। भारत में पहले बिटकॉइन क्रिप्टो करेंसी पर प्रतिबंध लगा हुआ था। क्योंकि बिटकॉइन को नियंत्रित करने के लिए कोई भी सरकार या ऑथोरिटी नहीं है।

अनियंत्रित मुद्रा होने की वजह से बिटकॉइन की कीमत में काफी उतार-चढ़ाव भी होते हैं। अतः यह थोड़ा सा जोखिम भरा भी हो सकता है और आपका अकाउंट हैक होने पर सारे के सारे बिटकॉइन चोरी भी किए जा सकते हैं और इस स्थिति में आप किसी से मदद नहीं ले सकते हैं। बिटकॉइन की खरीदारी ठीक उसी प्रकार हो सकती है, जिस प्रकार से हम कोई धातु सोना या चांदी खरीद के रखते हैं। बिटकॉइन को खरीदने के लिए हमें इससे संबंधित वेबसाइट पर जाकर इन्हें खरीदना होता है। भारत में इन्हें खरीदने के लिए Unocoin और Zebpay नामक वेबसाइट से इन्हें खरीदा जा सकता है। यहां पर बिटकॉइन को खरीदने के लिए कोई विशेष शुल्क नहीं है। बिटकॉइन को खरीदने के लिए वेबसाइट पर दी गई प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है तथा बिटकॉइन की मदद से आप अपने सामान्य बिल को भी भर सकते है। विभिन्न चरणों का पालन करने पर आप अपना बिटकॉइन वॉलेट बना सकते हैं और अपना बिटकॉइन खरीद सकते हैं।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक भवानीनगर
राजसमंद, मो. 97846-52469

Rasing Awareness

Children & Era of Digital Learning

To understand the behaviour of children, psychologists conducted some experiments on rats.

In their first experiment, a bunch of rats was kept in a small cage with a lot of food, eatables and a small lever. After enjoying food, these rats started pulling the lever. The moment the lever was pulled, there appeared a screen showing a movie for a few moments. Now the rats started pulling it again and again to see the screen.

They had to work hard to pull the lever but they enjoyed playing with the lever and watching the screen. In the second experiment, the same bunch of rats was kept in a different room that had better food and a good space for their rest. All of them ate food but rather than taking a rest after this, they started fighting and made the situation very chaotic.

In the third experiment, the rats were kept in another room that had food and space for their rest but also there were small wires attached to a battery. Again, the rats did not take a rest after finishing their food but started pushing other rats towards the wire.

Finally, the rats were taken out of the cages and were given a chance to go back to the cage of their choice. Their first choice was obviously the cage with lever but the second choice was surprisingly the third cage, the cage with an electric shock. Hardly any of them chose the second one.

The psychologists concluded from the behaviours of rats that intellectual creatures will always like to have something interesting to do, if not so than something non-interesting to do rather than sitting idle.

Replacing rats with children, we can see the same happening around us. During the time of pandemic, the academic and non-academic activities of children are restricted at digital level only. There is no way to decrease the screen time. There is no way to get rid of digital devices. There is no way to restrict the use of internet. But as demonstrated by the rat experiment, children will never like to remain idle. That means, they will

either make use of devices under the given boundaries or will misuse to break the boundaries. The responsibility of use or misuse will depend upon their surroundings. Therefore, parents need to take responsibility of children's digital learning. It requires a balanced approach, not controlled but supervised learning.

A small survey reveals the fact that if the devices of parents are locked, it is more likely that children will also make use of word "privacy". Parents need to understand that it is really a difficult time for children, they are facing challenges too. They are pushed to the era of digital learning whether they like it or not. It is not easy that someone has a lot in hands for their entertainment but has to keep him/herself away from it every time. The supervised learning could be a solution to it, partially if not fully.

As the experiment demonstrated, children need some activities to engage themselves physically & mentally, therefore, parents have to be innovative and come out with such deviceless activities to engage them and channelize their energy in right direction.

Dr Vivek Vijay
Assistant Professor
IIT, Jodhpur

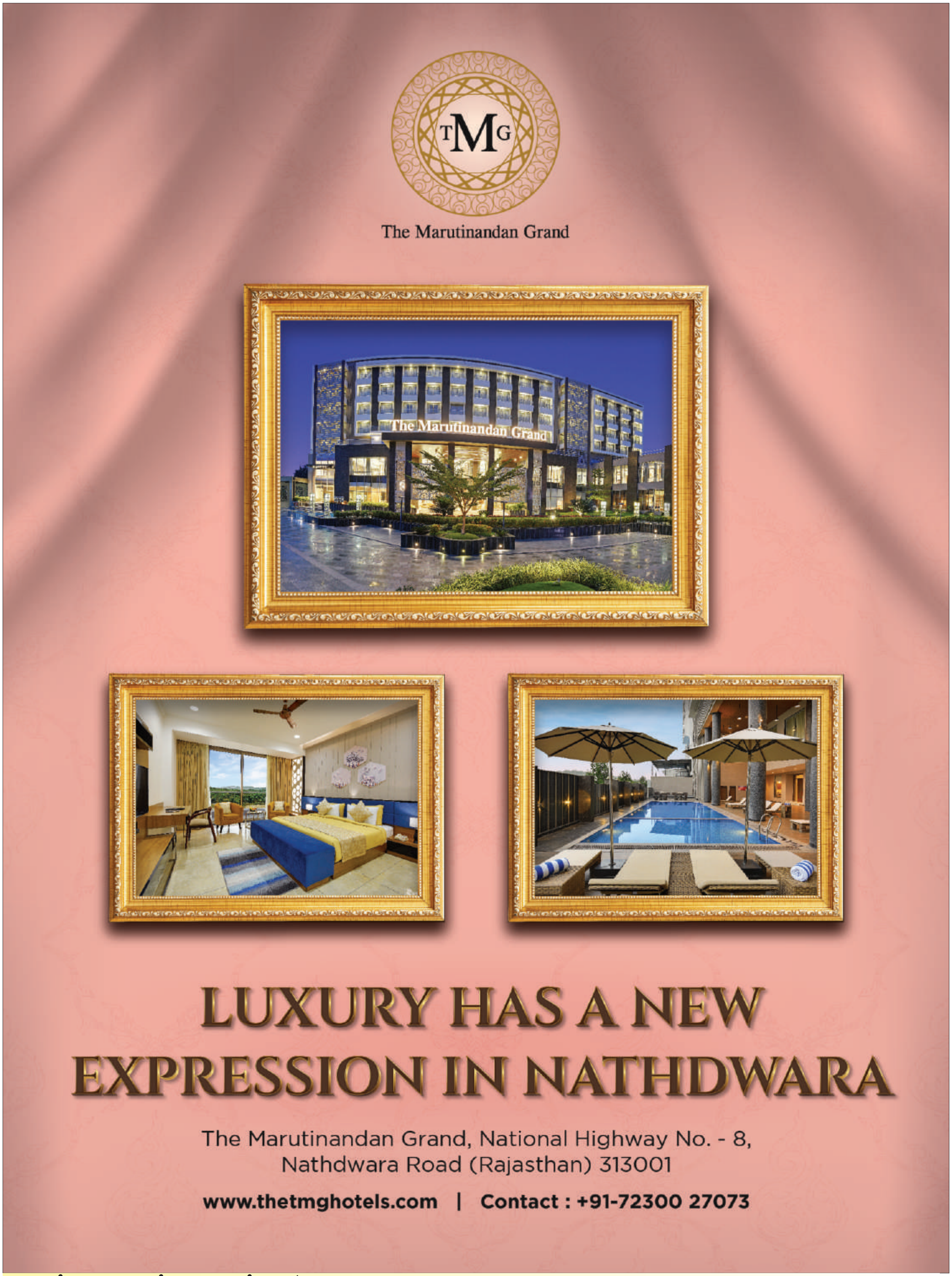
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हम पर्यावरण संरक्षण और संतुलन हेतु प्रतिबद्ध हैं।

हमारा लक्ष्य आज और आने वाले कल को
हरित और स्थायित्व प्रदान करना है।

World's leading integrated Zinc-Lead Producer | World's 6th largest integrated Silver Producer

Hindustan Zinc Limited

Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India
P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.linkedin.com/companyhindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 9672980901
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To